अध्याय 10

भारत में महात्मा गांधी और स्वातंत्र्य आन्दोलन

गांधीजी के गुरु गोखलेजी इंग्लैंड से भारत लौट आए थे और पूना में बीमार रहने लगे थे परन्तु ज्यों ही उन्हें पता चला कि गांधीजी का जहाज बंबई (मुंबई) के बंदरगाह की ओर आ रहा है, त्यों ही वे बंबई (मुंबई) की ओर दौड़े और उनके स्वागत की तैयारी में लग गए।

9 जनवरी, 1915 को गांधीजी का जहाज बंदरगाह पर लगा। जनता की भीड़ उनके दर्शनों के लिए टूट पड़ी। जनता 'महात्मा गांधी की जय' से आकाश गुँजा दिया। उसने देखा कि धोती, दुपट्टे, अँगरखे और काठियावाड़ी फेंटे की पोशाक में ठिगना साँवला-सा आदमी, नंगे पैरों अपोलो बंदरगाह पर उतर रहा है। यही उसका महात्मा गांधी था। अपोलो बंदरगाह पर वाइसराय और विशिष्ट व्यक्ति, जिन्हें आजकल वी.आई.पी. कहा जाता है, उतरने दिए जाते थे। गांधीजी को भी सरकार ने विशिष्ट व्यक्ति समझकर वहाँ उतरने की अनुमति दे दी थी।

गोखले अपने शिष्य को भीड़ से बड़ी कठिनाई के साथ बाहर ला सके। गांधीजी की पत्नी कस्तूरबा सफेद धोती और ब्लाउज पहने उन्हीं के साथ नंगे पैरों चल रही थीं। जनता बैरिस्टर गांधी की सादगी पर मुग्ध हो रही थी। उसके स्वागत-सत्कार को नम्रतापूर्वक स्वीकार कर गांधीजी अपने गुरु के साथ पूना गए और कुछ समय तक उनके साथ रहे। गुरुजी ने उन्हें एक वर्ष तक देश में भ्रमण करने की सलाह दी। वे चाहते थे कि गांधीजी अपनी आँखों से देशवासियों की दशा देखें और तब उनकी भलाई और अधिकारों के समुचित उपाय पर विचार करें। गांधीजी ने उनकी आज्ञा शिरोधार्य की। सबसे पहले वे बंबई (मुंबई) के गवर्नर विलिंग्डन से मिले। गवर्नर ने उनसे कहा, 'जब तुम गवर्नमेंट के खिलाफ कोई काम शुरू करो, तो मुझे उसकी पूर्व सूचना देना न भूलना।' 'लार्ड साहब, मैं तो छिपकर कोई काम करता ही नहीं। मैं कार्यारम्भ के पूर्व आपको अवश्य सूचना दूँगा, जिससे आप जनता की शिकायतों को जान सकें और उन्हें दूर कर सकें।'

देश-भ्रमण के पूर्व गांधीजी अपने रिश्तेदारों से मिलने राजकोट और पोरबंदर जाने के लिए रेल से रवाना हुए। मार्ग में एक स्टेशन पर कार्यकर्ता उनसे मिला और वीरमगाम के किसानों पर लगने वाले टैक्स (जकात) की ज़्यादती की शिकायत करने लगा। गांधीजी को उस समय ज्वर था। उन्होंने उससे इतना ही पूछा- 'क्या आप लोग जेल जाने को तैयार हैं?' कार्यकर्ता ने बड़े उत्साह से 'हाँ' कहा। 'तो, मैं ज़रूर इस बात की जाँच करूँगा' कहकर गांधीजी ने कार्यकर्ता को आश्वस्त किया।

काठियावाड़ (सौराष्ट्र) में जहाँ-जहाँ गांधीजी गए, लोगों ने वीरमगाम के टैक्स की शिकायत की। 'रामकाज कीन्हें बिना मोहिं कहाँ विश्राम' की बात चरितार्थ हुई, आए तो थे परिवार के बीच कुछ समय बिताने और विश्राम करने, पर जनता ने उन्हें विश्राम नहीं करने दिया। उन्होंने जनता की शिकायतों के प्रमाण एकत्र किए और

उन्हें गवर्नर के पास भेजकर किसानों को राहत पहुँचाने की प्रार्थना की।

गवर्नर ने जब ध्यान नहीं दिया, तब उन्होंने वाइसराय के दरवाजे खटखटाए। वाइसराय ने शिकायतों को सच पाया और टैक्स को रद्द कर दिया। भारत में गांधीजी की यह प्रथम सफल जन-सेवा थी।

अब गांधीजी ने देश-भ्रमण प्रारम्भ किया। रेल के तीसरे दर्जे में मामूली मुसाफिर की तरह उन्होंने यात्रा की। सफेद धोती, सफेद कुर्ता और सादी कश्मीरी टोपी उनकी वेश-भूषा थी। उन्होंने रंगून आदि स्थानों की यात्रा की। कलिकाता (कलकत्ता) में उन्होंने विद्यार्थियों के बीच बोलते हुए कहा- 'तुम्हें धार्मिक और सदाचारी बनना चाहिए। छिपकर कोई काम मत करो। जो काम करो, खुलकर करो।' कुंभ के मेले के समय हरिद्वार गए। वहाँ की गन्दगी देखकर बड़े दुखी हुए। कुंभ मेले में उन्होंने फिनिक्स आश्रम के नवयुवकों को सेवाकार्य में लगा दिया। ऋषिकेश में एक साधु मिले। उन्होंने उनकी सेवा की बड़ी प्रशंसा की और अंत में कहा, 'आप अपने आपको हिन्दू कहते हैं। फिर आपने चोटी और जनेऊ क्यों उतार दिए। ये तो हिन्दू-धर्म की निशानी है।' गांधीजी ने उत्तर दिया, 'मैं चोटी तो रख सकता हूँ, पर जनेऊ नहीं पहनूँगा, क्योंकि देश में बहुत-से लोग जनेऊ न पहनकर भी हिन्दू बने हुए हैं।'

पूर्व और उत्तर भारत की यात्रा के पश्चात् गांधीजी ने दक्षिण यात्रा की। मदुरै (मदुरा) में जनता ने उनका भव्य स्वागत किया। एक स्थान पर बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर उन्होंने हरिजनों की दुर्दशा पर दुख प्रकट किया। उन्होंने कहा- 'हिन्दू धर्म में अछूतों का तिरस्कार करने की बात नहीं है, उनके साथ धर्म अन्याय नहीं कर रहा है, उसके अनुयायी कर रहे हैं।' उन्होंने अछूतों को सफाई से रहने और जूठा अन्न न खाने की सलाह दी। दूसरी सभा में उन्होंने देशी भाषाओं के प्रयोग की बात पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा- 'अंग्रेज़ी भाषा अच्छी है, परन्तु इसलिए हमें अपनी देशी भाषाओं का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। हमें मातृभाषा से प्रेम करना चाहिए।' वे अपने भाषणों में चरखे से सूत कातने और कपड़ा बुनने की चर्चा भी करते थे।

जब गांधीजी ने सम्पूर्ण देश की यात्रा कर ली, तब वे किसी स्थान पर अपने अफ्रीका के साथियों को लेकर बैठना चाहते थे और अपने कार्यक्रमों का केन्द्र बनाना चाहते थे। उन्हें कई स्थान सुझाए गए, परन्तु उन्होंने अहमदाबाद को ही चुना।

साबरमती का सत्याग्रह आश्रम

गांधीजी में प्रकृति का आकर्षण बहुत प्रबल था। वे जनता से दूर अपना आश्रम बनाना चाहते थे। अहमदाबाद के पास साबरमती नदी बहती है। उसी के किनारे 15 मई, 1915 को महात्मा जी ने आश्रम की स्थापना की। उन्होंने उसका नाम 'सत्याग्रह-आश्रम' रखा, पर जनता उसे 'साबरमती-आश्रम' ही कहती रही। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह सहित स्वदेशी व्रत का जीवन आश्रमवासियों को बिताना था। आश्रम में पहले उनके अफ्रीका के थोड़े साथी सम्मिलित हुए, फिर धीरे-धीरे आश्रमवासियों की संख्या बढ़ती गई।

आश्रमवासियों को सादे वस्त्र और सादे भोजन से संतोष करना पड़ता था। भोजन के पदार्थों में मिर्च-मसाले नहीं डाले जाते थे, दूध बहुत कम दिया जाता, परन्तु फल और मेवे अधिक दिए जाते थे।

आश्रमवासियों को छुट्टियाँ नहीं दी जाती थीं। उन्हें अपने हाथ से ही सारा काम करना पड़ता था। उनसे किसी प्रकार की आर्थिक सहायता नहीं ली जाती थी। जो अतिथि आते थे, उन्हें भी आश्रम के नियमों का पालन करना होता था।

आश्रम में हरिजन-परिवार का प्रवेश

आश्रम की स्थापना के कुछ समय बाद गांधीजी को हरिजनोद्धार का कार्य करने वाले ठक्कर बापा की एक चिट्ठी मिली, जिसमें उन्होंने आश्रम में एक हरिजन परिवार को रखने की सिफारिश की थी और पूछा था कि क्या उसे शीघ्र भेजा जा सकता है। गांधी धर्मसंकट में पड़ गए, इसलिए नहीं कि उन्हें आपत्ति थी, वरन् इसलिए कि आश्रम के कुछ लोगों को बहुत आपत्ति थी। फिर भी गांधीजी ने अछूत-परिवार को आश्रम में बुला लिया। आश्रमवासी तो गांधीजी की इच्छा का बहुत समय तक विरोध नहीं कर सके, परन्तु विरोध घर में ही बहुत दिनों तक जारी रहा। उनकी पत्नी कस्तूरबा अछूतों के प्रवेश में उन पर बहुत झल्लाई, बहुत बिगड़ी। गांधीजी अपने सिद्धान्त से डिगने वाले प्राणी नहीं थे। उन्होंने दृढ़ता के साथ अपनी पत्नी से कह दिया, 'आश्रम से हरिजन-परिवार नहीं जा सकता। यदि तुम उनके साथ नहीं रह सकतीं, तो तुम आश्रम छोड़कर जा सकती हो।' कस्तूरबा ने अंत में गांधीजी की इच्छा का पालन किया। वे हरिजन-परिवार के साथ रहने लगीं।

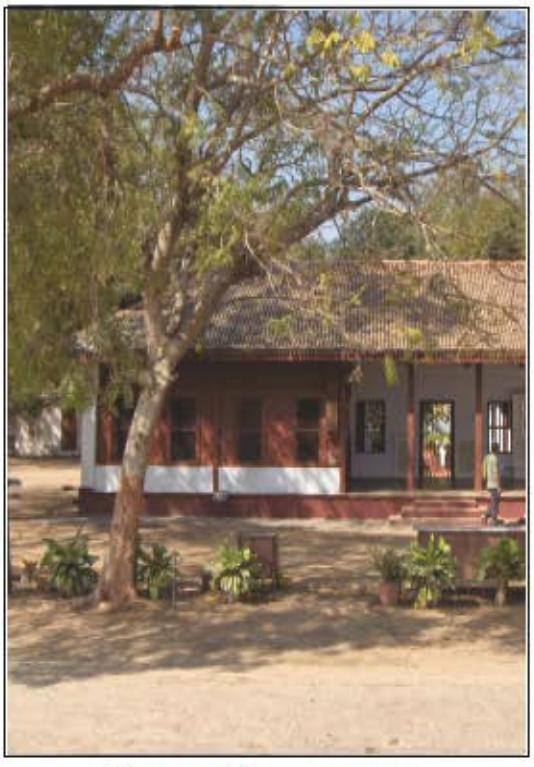

चित्र 6. साबरमती का सत्याग्रह आश्रम

हरिजन-परिवार को आश्रम में देखकर बहुत-से दानियों ने दान देना बन्द कर दिया। आश्रम की आर्थिक स्थिति डगमगा गई। उसकी व्यवस्था गांधीजी के भतीजे मगनलाल कर रहे थे। उन्होंने गांधी से कहा, 'बापू, आपकी नीति से आश्रम की अर्थ-व्यवस्था बिगड़ती जा रही है। हमारे पास उसे चलाने के लिए अब द्रव्य नहीं रह गया है।'

बापू ने कहा- 'घबराओ नहीं, भगवान सहायता करेगा' और सचमुच दूसरे दिन ही भगवान ने सहायता कर दी। बापू बैठे हुए कुछ काम कर रहे थे, सबेरे का वक्त था, एक बालक दौड़ा-दौड़ा आया और बोला- 'बापू, मोटर में एक सेठ आए हैं और आपको बुला रहे हैं।' गांधीजी उठकर फाटक के पास गए। मोटर में बैठे सेठ ने उतरकर कहा- 'गांधीजी, मैं आश्रम की सहायता करना चाहता हूँ। आप स्वीकार करेंगे न?' गांधीजी ने कहा- 'क्यों नहीं?'

'तो कल मैं इसी समय आऊँगा। आप आश्रम में ही रहें' - इतना कहकर सेठ चले गए। दूसरे दिन ठीक समय पर फाटक के पास मोटर का भोंपू बजा। गांधीजी समझ गए कि सेठ का आगमन हुआ है। वे आश्रम के द्वार

पर गए सेठ ने तुरन्त उनके हाथ में तेरह हजार के नोट रख दिए। गांधीजी को ऐसा दानी और दान देने का ऐसा तरीका पहली ही बार दिखाई दिया। इस सहायता से एक वर्ष के लिए मगनलाल भाई बेफिक्र हो गए। इसी अवधि में लोगों की गांधीजी के हरिजन-कार्य में रुचि बढ़ गई और वे उनकी सहायता के लिए तैयार हो गए।

आश्रम में हरिजन-परिवार आश्रमवासियों के साथ हिलमिल गया। हरिजन दूधा भाई की एक छोटी कन्या थी। गांधीजी उसे बहुत प्यार करते थे। उसे उन्होंने अपनी पोष्य पुत्री बना लिया। जब आश्रम का कार्य निश्चित गति से चलने लगा, तब गांधीजी ने अपने सिद्धान्तों को जनता तक पहुँचाने के लिए आश्रम से बाहर जाने के कार्यक्रम बनाए।

हिन्दू विश्वविद्यालय का क्रांतिकारी भाषण

4 फरवरी, 1916 का दिन बनारस (वाराणसी) के इतिहास में सदा स्मरण रहेगा। महामना पं. मदनमोहन मालवीय ने देश के कोने-कोने में घूमकर चंदा एकत्र कर हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। शहर से दूर कई सौ एकड़ भूमि पर विश्वविद्यालय के भव्य भवन खड़े थे। उस दिन मालवीयजी का स्वप्न साकार हुआ था। इसका शिलान्यास वाइसराय द्वारा हुआ था और उसी के उपलक्ष्य में यह उद्घाटन-समारोह मनाया जा रहा था। देश भर के राजा-महाराजा, अंग्रेज़ अधिकारी आदि गणमान्य लोग इकट्ठे हुए थे। महाराज, दरभंगा हीरे-जवाहरातों में जड़ी पोशाक पहनकर सभापति-पद पर विराजमान थे। आज महात्माजी को बोलना था। सभापति ने उन्हें मंच पर आने के लिए आमंत्रित किया। काठियावाड़ी पगड़ी, अँगरखा, धोती और चप्पल पहने ठिगना और साँवला-सा व्यक्ति धीरे-धीरे मंच पर आकर खड़ा हो गया और उसने बोलना प्रारम्भ कर दिया-

'मैं भाषण देने नहीं आया। अपनी बात कहने आया हूँ। मैं देख रहा हूँ कि यहाँ वक्ता अंग्रेज़ी में बोल रहे हैं, जबकि यहाँ की जनता हिन्दी बोलती और समझती है। हम अपनी भाषाओं का कब तक तिरस्कार करते रहेंगे? इस मंच पर बोलने वाले महाराज और वक्ताओं ने भारत की गरीबी की बात कही, परन्तु मैं यहाँ तो गरीबी की कोई निशानी नहीं देखता। राजा-महाराजा हीरे-जवाहरातों की पोशाक में शोभित हो रहे हैं। मेरा विश्वास है कि भारत का उद्धार तभी होगा, जब धनी-मानी लोग अपने हीरे-जवाहरात को जनता की गरीबी दूर करने के लिए अर्पित कर देंगे। गरीब जनता की जेब से निकाले गए पैसों से धनी लोग शानदार ज़िन्दगी बिता रहे हैं। ऊँचे-ऊँचे महल खड़े कर रहे हैं। मैं राजद्रोहियों का सम्मान करता हूँ, पर उनके हिंसक कार्यों को पसन्द नहीं करता। मैंने विश्वनाथ के मंदिर के आसपास जो गंदगी देखी, उससे मुझे बहुत दुख हुआ। रेल-यात्रा करते समय भी मैं लोगों को डिब्बे में गंदगी फैलाते देखता आया हूँ। अज्ञान ही इसका कारण है। क्या हम जनता को स्वच्छता से रहना नहीं सिखा सकते?'

जब गांधीजी ने ब्रिटिश शासन की तीखी आलोचना प्रारम्भ की, तब राजभक्त 'बैठो-बैठो' चिल्लाने लगे और नवयुवक तथा विद्यार्थी 'बोलिए, बोलिए' की आवाज़ लगाने लगे। सभा में हुल्लड़ भी मचने लगा। लोग भागने लगे। सभापति महाराजा दरभंगा सभा छोड़कर चले गए। तब गांधीजी ने हँसते हुए कहा- 'मैंने कई सभाओं में लोगों को सभा छोड़कर जाते देखा है, परन्तु सभापति को सभा समाप्त किए बिना जाते नहीं देखा।'

महात्माजी के भाषण में देश की दशा का जो चित्रण था और पूँजीपति राजा-महाराजाओं की विलासिता पर

जो सीधा प्रहार था तथा अंग्रेज़ी शासन की जो चुभती आलोचना की थी, उसने बड़ी सनसनी फैला दी। बनारस (वाराणसी) के कलेक्टर ने उन्हें तुरन्त काशी छोड़ देने का आदेश दिया। मालवीयजी ने आदेश को रद्द कराने की असफल कोशिश की। गांधीजी स्वयं काशी छोड़ने का कार्यक्रम बना चुके थे, अत: वे दूसरे दिन वहाँ से चल दिए।

महात्माजी का बनारस (वाराणसी) विश्वविद्यालय में दिया गया पहला भाषण था, जिसने सारे देश में तहलका मचा दिया। उन्होंने आडम्बर के सीधे, साफ शब्दों में देश की दशा पर दो आँसू मात्र बहाए थे। उन्होंने सार्वजनिक जीवन में किसी की प्रसन्नता या अप्रसन्नता की चिन्ता किए बिना अपनी बात निडर होकर कही। उनके चरित्र की यह बड़ी भारी विशेषता थी।

चंपारन में गांधीजी

बिहार के चंपारन में नील की खेती होती थी। खेती पर बिहारी किसान और गोरों की मालिकी थी। किसानों को अपनी ज़मीन के 3/20 हिस्से मे गोरों के लिए नील की खेती कानूनन करनी पड़ती थी। वहाँ बीस कट्ठे का एक एकड़ होता था। उसमें तीन कट्ठे नील किसानों को बोना पड़ता था। गोरे इन किसानों को उनके श्रम का उचित लाभ नहीं देते थे। गांधीजी चंपारन गए और जब किसानों की शिकायत की जाँच करने लगे, तो गोरों ने उनका विरोध किया। वहाँ के अंग्रेज़ कमिश्नर ने गांधीजी की जाँच में रोड़े अटकाए। उन्हें गिरफ़्तार किया गया, परन्तु वाइसराय के आदेश से वे छोड़ दिए गए। जाँच में किसानों का पक्ष सही पाया गया और सरकार को सौ वर्ष पुराने तीन-कठिया कानून को रद्द करना पड़ा। गोरे नील के व्यापारियों को अनुचित रीति से लिए गए रुपये किसानों को लौटाने पड़े। चंपारन की सत्याग्रह की लड़ाई ने गांधीजी को पीड़ितों के रक्षक के रूप में और अधिक ख्याति प्रदान की।

चंपारन में गांधीजी अपने आश्रम में लौटे ही थे कि अहमदाबाद के मजदूरों ने उनके सामने अपनी कष्ट कहानी सुनाई। मिल-मालिक उन्हें बहुत कम वेतन दे रहे थे। यद्यपि गांधीजी का मिल-मालिकों से मधुर सम्बन्ध था, फिर भी वे मजदूरों के लिए उनसे झगड़ने को तैयार हो गए, क्योंकि मजदूरों का पक्ष उन्हें सही मालूम हुआ। गांधीजी ने मजदूरों को हड़ताल की सलाह दी। पर यह शर्त रखी कि हड़ताल सर्वदा शांतिपूर्ण हो। हड़ताल कई दिनों तक चली। इस बीच गांधीजी ने देखा कि मजदूरों का धैर्य टूट रहा है और वे हिंसा की ओर प्रवृत्त हो रहे हैं, अत: उन्होंने आत्मशुद्धि की दृष्टि से और मजदूरों पर प्रभाव डालने के लिए भी उपवास शुरू कर दिया। मिल-मालिक झुके और उन्होंने पंच-फैसले के अनुसार मजदूरों की माँग पूरी कर दी।

खेड़ा सत्याग्रह

गुजरात में खेड़ा नामक एक जिला है। वहाँ के अधिकांश लोग किसान हैं। खेती उनकी आजीविका का एकमात्र साधन है। सन् 1917-18 में जिले के अधिकांश फसल मारी गई थी। किसान निराश थे। लगान देने में असमर्थ थे परन्तु सरकार सख्ती से लगान वसूल करने पर तुल गई थी। कायदा यह था कि फसल रुपए में चार आने से कम और चार आने से अधिक हो तो उसे आधा लगान मुल्तबी रखा जा सकता है। गांधीजी को जानकारी थी कि

जिले के छह सौ चार गाँवों का आधा लगान मुल्तबी रखने का सरकार ने निर्णय लिया है। किसान सरकार द्वारा दी गई राहत से सन्तुष्ट नहीं थे। सरकार के एजेंट पटवारियों ने सरकार को झूठी रिपोर्ट दी थी। विवाद इस बात पर था कि फसल कितने आने हुई है। गांधीजी ने सरकार के सामने प्रस्ताव रखा कि वह प्रजा के प्रतिनिधियों की सहायता से फसल की उपज की जाँच कराए और किसानों को न्यायपूर्ण राहत दें।

सरकार ने गांधीजी के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और लगान की वसूली सख्ती से प्रारम्भ कर दी। अब गांधीजी के पास सत्याग्रह-अस्त्र के उपयोग के सिवाय दूसरा उपाय नहीं था। उन्होंने किसानों को लगान न चुकाने की सलाह दी। जिले भर में लगानबंदी के सत्याग्रह का जोर बढ़ा, तो सरकार ज़रा झुकी। उसने छोटे किसानों की लगान वसूली स्थगित कर दी परन्तु बड़े किसानों की लगान-वसूली में कुछ भी राहत नहीं दी। गांधीजी ने सरकार के इस निर्णय को सत्याग्रह की आधी विजय कहा, क्योंकि गरीब और अमीर दोनों श्रेणियों के किसानों के फसल के खराब हो जाने के कारण कष्ट उठाना पड़ रहा था। जिन्हें लगान चुकाना था, उन्हें अपने किसानी के पशु-स्त्रियों के आभूषण और घर का दीगर सामान बेचना पड़ रहा था। उनके सामने संकट यह था कि यदि वे समय पर लगान न चुकाते तो उनके खेत नीलामी पर चढ़ जाते।

यह सच है कि सत्याग्रह से पूर्ण सफलता नहीं मिली, परन्तु इससे जनता में सरकार के अन्यायों के विरुद्ध लड़ने का साहस अवश्य पैदा हुआ।

विद्रोही गांधी

ब्रिटिश सरकार ने महायुद्ध समाप्त होने पर भारतीयों की सहायता के उपलक्ष्य में कुछ शासन-सुधार प्रस्तावित किए, उन्हें कुछ राजनीतिक नेताओं ने स्वीकार करने के पक्ष में और कुछ ने विपक्ष में राय दी। विपक्ष में राय देने वाले गरम दल के लोग कहलाए और पक्ष में राय देने वाले नरम दल के। गरम दल वाले नेता सुधारों को निष्प्राण कहते थे और चाहते थे कि सरकार साम्राज्य के अन्तर्गत भविष्य में पूर्ण शासकीय अधिकार प्रदान कर दे। इधर भारतीयों को स्वाधीनता की आकांक्षा बढ़ रही थी। उसने रोलेट की अध्यक्षता में एक कमेटी कायम की। उसने अपनी रिपोर्ट में भारतीयों की स्वतंत्रता की भावनाओं को रौंदने के लिए सुझाव पेश किए, जिनके अमल में लाने पर जनता सम्मानपूर्वक ज़िन्दगी नहीं बिता सकती थी। उसके अनुसार सरकार किसी को भी राजद्रोही होने के संदेह में बिना मुकदमा चलाए बंदी बना सकती थी। बिना आज्ञा वह निर्दिष्ट स्थान को नहीं छोड़ सकता था। पुलिस की आज्ञा से उसे उसके सामने हाजिरी देनी पड़ती। जिस पुस्तक को सरकार राजद्रोहात्मक समझती, उसे न कोई रख सकता था और न बेच सकता था। व्यक्ति की स्वाधीनता पर यह जबरदस्त कुठाराघात था।

जिस समय 'रोलेट कमेटी' की रिपोर्ट प्रकाशित हुई, गांधीजी बीमारी से उठकर धीरे-धीरे स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे। उन्होंने कुछ मित्रों से सलाह ली और सरकार के प्रस्तावित रोलेट बिल का विरोध करने का निश्चय किया। सरकार ने रोलेट की रिपोर्ट को कानून का रूप दे दिया।

गांधीजी दमनकारी कानून के सम्बन्ध में नेताओं से विचार करने के लिए मद्रास गए। इन्होंने उनसे कहा कि हमें इस कानून को रद्द कराने के लिए आन्दोलन करना होगा और यह आन्दोलन सत्याग्रह के सिद्धान्त के अनुसार चलाना होगा। मद्रास के नेता गांधीजी से सहमत हो गए। अत: सारे देश में 30 मार्च, 1919 को हड़ताल करने की घोषणा की गई परन्तु बाद में तारीख बदलकर 06 अप्रैल निश्चित की गई। घोषणा के अनुसार ही सारे देश में हड़ताल हो गई। दिल्ली में पूर्व निर्धारित 30 मार्च, 1919 को हड़ताल की गई। स्वामी श्रद्धानन्द ने ज़ोरदार भाषण दिया। पुलिस और सेना ने जनता को तितर-बितर करने की कोशिश में गोली चलाई, जिससे कुछ आदमी मारे गए। स्वामी श्रद्धानन्द का ऊँचा भव्य शरीर था। सन्यासी के वेश में वे जन-समूह के आगे-आगे चल रहे थे। जब सैनिकों ने उन्हें रोका, तो उन्होंने अपनी छाती खोलकर सामने कर दी। दिल्ली की जनता का बलिदान और स्वामी जी की दिलेरी के समाचार फैलते ही देश की जनता में बिजली-सी दौड़ गई। वह कुछ करने के लिए उतावली हो गई। 06 अप्रैल को बंबई (मुंबई) में हड़ताल के रूप में गांधीजी ने सत्याग्रह का श्रीगणेश किया। हज़ारों लोग जुलूस बनाकर सड़कों पर निकले। गांधीजी ने कई स्थानों पर भाषण दिए और जनता को सत्याग्रह के लिए प्रेरित किया। गांधीजी ने अपनी दो जब्त पुस्तकें 'हिन्द स्वराज्य' और 'सर्वोदय' को बेचकर कानून भंग किया। यह भी सत्याग्रह का एक प्रकार था परन्तु सरकार ने गांधीजी और उनके साथियों को कानून भंग के लिए गिरफ्तार नहीं किया।

गांधीजी की गिरफ्तारी

गांधीजी दिल्ली की जनता के निमंत्रण पर दिल्ली रवाना हो गए परन्तु मार्ग में ही पुलिस ने उन्हें दिल्ली और पंजाब में न जाने देने की सरकारी सूचना दी। पुलिस ने उन्हें गाड़ी से उतरने को कहा। जब वे नहीं उतरे, तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें बंबई (मुंबई) भेज दिया गया, जहाँ वे छोड़ दिए गए।

गांधीजी की गिरफ्तारी का समाचार ज्यों ही अहमदाबाद और दूसरे शहरों में पहुँचा, त्यों ही जनता में असन्तोष की आग भड़क उठी और वह हिंसा के काम करने लगी। स्थान-स्थान पर हड़तालें हुईं। एक स्थान पर पुलिस कर्मचारी की हत्या की गई और रेल की पटरी उखाड़ी गई। अहमदाबाद में सरकार ने फौजी कानून जारी कर दिए। गांधीजी को जनता के हिंसा के कार्यों से दुख हुआ। वे बंबई (मुंबई) से अहमदाबाद गए। कमिश्नर से मिले। उसे फौजी कानून की अनावश्यकता समझाई। अंत में सरकार ने फौजी उठा लिया, जिससे जनता शांत हो गई परन्तु गांधीजी का हृदय जनता के हिंसापूर्ण कार्यों में बहुत दिनों तक अशांत बना रहा। उन्होंने प्रायश्चित स्वरूप तीन दिन तक उपवास किया और सत्याग्रह को स्थगित कर दिया। जनता ने सत्याग्रह का ठीक-ठीक तरह से अर्थ नहीं समझा था। बंबई (मुंबई) में गिरफ्तार साथियों को छुड़ाने के लिए लोगों ने जेल पर धावा बोल दिया था, यह सत्याग्रह के सिद्धान्त के विपरीत कार्य था।

गांधीजी स्वाधीनता की लड़ाई में मुसलमानों का भी सहयोग आवश्यक समझते थे। भारत में मुसलमान अंग्रेज़ों से इसलिए नाराज़ थे कि उन्होंने युद्ध की संधि में टर्की के सुल्तान को खलीफा पद से वंचित कर दिया था और उसके स्थान पर अपने पिट्ठू को खलीफा बना दिया था। गांधीजी ने मुसलमानों के आन्दोलन में साथ देने के

लिए देश को तैयार किया। खिलाफत की एक सभा में उन्होंने विदेशी माल के बहिष्कार की जब बात कही, तो उस पर लोग सहमत नहीं हुए। फिर एकाएक उनके मुख से असहयोग शब्द निकल गया। उन्होंने कहा कि अगर हम सरकार से सहयोग करना छोड़ दें, तो उसे हमारी माँगों को स्वीकार करने के लिए विवश होना पड़ेगा। गांधीजी को ऐसा प्रतीत हुआ कि सत्याग्रह की अपेक्षा असहयोग-आन्दोलन अधिक शांतिपूर्ण ढंग से चलाया जा सकता है। यदि लोग अपनी सरकारी उपाधियाँ छोड़ दें, वकील कचहरी जाना छोड़ दें, विद्यार्थी सरकारी स्कूलों में पढ़ना छोड़ दें और सारे सरकारी नौकर नौकरी छोड़ दें, तो सरकार का कामकाज बिल्कुल ठप्प हो जाएगा।

गांधीजी ने मुसलमानों को खिलाफत के मामले को हल करने के लिए असहयोग का मार्ग सुझाया था, परन्तु बाद में यह मार्ग खिलाफत तक सीमित नहीं रहा, स्वाधीनता के आन्दोलन का एक अंग बन गया।

गांधीजी ने रोलेट एक्ट के विरोध में हड़ताल के रूप में सत्याग्रह प्रारम्भ करने की जो धारणा की थी, उसके फलस्वरूप देश भर में हड़ताल हुई और जनता पर पुलिस के प्रहार भी हुए। अमृतसर में हड़ताल मानने के लिए जनता ने जलियाँवाला बाग में सभा का आयोजन किया। सभा में सरकार की दमन-नीति का विरोध किया जाने वाला था। पंजाब सरकार ने जनरल ओडायर को अमृतसर की स्थिति सँभालने के लिए नियुक्त कर दिया। उसने आते ही सार्वजनिक सभा की मनाही की घोषणा कर दी। जनता ने उसकी उपेक्षा की। बाग जन-समूह से भर गया। सभा का कार्य चल ही रहा था कि जनरल ओडायर पचास सैनिकों को लेकर वहाँ पहुँच गया और उसने पूर्व सूचना दिए बिना ही जनता पर गोली दागने का आदेश दे दिए। अधिकांश जनता भाग नहीं सकी। पल्टन ने एक हज़ार छह सौ पचास बार गोली दागी, जिससे सरकारी रिपोर्ट के अनुसार तीन सौ उन्यासी आदमी मारे गए और एक हज़ार एक सौ सैंतीस घायल हुए। उसके बाद ही जनरल ओडायर ने आर्डर जारी किया कि भारतीय एक विशिष्ट सड़क पर खड़े होकर न चलें, चौपाया होकर रेंगें। प्रत्येक भारतीय को चाहिए कि अंग्रेज़ अफसर के आगे झुककर सलाम करें।

कानून भंग करने वालों को कोड़ों से पीटा जाता था। सारा पंजाब दमन की चक्की में पिस रहा था। गांधीजी को जनता की हिंसा और प्रतिहिंसा से बड़ा क्षोभ हुआ। इसलिए उन्होंने 18 अप्रैल को रोलेट एक्ट विरोधी सत्याग्रह-आन्दोलन बन्द करने की घोषणा कर दी थी।

सत्याग्रह-आन्दोलन को अपनी हिमालय-जैसी भूल कहने और उसे स्थगित करने से गांधीजी के कई साथी बहुत रुष्ट हुए और पंजाब के युवकों ने तो यहाँ तक कहा कि गांधीजी आन्दोलन बन्द न करते, तो सरकार की दमन करने की हिम्मत न पड़ती।

असहयोग आन्दोलन

जलियाँवाला बाग-हत्याकांड तथा अन्य नृशंस अत्याचारों के लिए उत्तरदायी जनरल ओडायर की भारत सरकार ने निंदा न कर प्रशंसा की। कुछ लोगों ने उसे ब्रिटिश साम्राज्य का रक्षक तक घोषित किया। इससे स्पष्ट हो गया कि ब्रिटिश सरकार बल-प्रयोग से भारतीयों पर शासन करना चाहती है। उन्हें स्वाधीन बनाने का उसका कोई इरादा नहीं है।

सरकार के जन-विरोधी रुख से गांधीजी का ब्रिटिश न्याय में रहा-सहा विश्वास भी उठ गया। उन्होंने अपने साथियों के साथ अफ्रीका में बोअर-युद्ध तथा जुलू-विद्रोह में घायलों की सेवा सुश्रूषा कर ब्रिटिश सरकार की सहायता की थी। प्रथम महायुद्ध के समय इंग्लैंड में भारतीयों को घायलों की सेवा के लिए तैयार किया गया था और भारत आने पर मित्र और जनता के विरोध के बावजूद खेड़ा के रंगरूटों की भर्ती का भी प्रयत्न किया था। उन्होंने ये सब सेवा-कार्य इसलिए किए थे कि ब्रिटिश सरकार के साथ सद्भावना प्रदर्शित करने से भारत को शीघ्रतिशीघ्र स्वराज्य प्राप्त करने में सहायता मिल सकेगी।

युद्ध की समाप्ति के बाद सरकार ने स्वराज्य की दिशा में जो पहला कदम उठाया था, वह मांटेग्यु चेम्सफोर्ड के सुधार के अन्तर्गत कुछ शासकीय विभागों का हस्तांतरण था। उन विभागों पर यद्यपि भारतीय मंत्री प्रशासन कर सकते थे, परन्तु उन पर गवर्नर और वाइसराय का अंकुश रखा गया था। इस द्वैत शासन वाले सुधारों का अधिकांश नेताओं ने विरोध किया, उन्हें निकम्मा कहा। गांधीजी को विश्वास हो गया कि बिना संघर्ष किए स्वराज्य की मंजिल तय नहीं हो सकेगी। उन्हें असहयोग ही एक ऐसा उपाय सूझ पड़ा, जो अंग्रेज़ों को स्वराज्य देने के लिए विवश कर सकता था।

31 जुलाई, 1920 की रात को भारतीय जनता को 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे प्राप्त करूँगा' का मंत्र देने वाले तेजस्वी नेता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का अचानक बंबई (मुंबई) में देहावसान हो गया। दूसरे दिन पहली अगस्त को गांधीजी ने लोकमान्य द्वारा भारतीय जनता को दिए गए वचन को पूरा करने के लिए ब्रिटिश सरकार से असहयोग युद्ध की घोषणा कर दी और ब्रिटिश सरकार द्वारा दिए गए 'कैसरे हिन्द पदक' को लौटाते हुए वाइसराय को लिखा, 'ब्रिटिश सरकार लगातार अन्याय करती जा रही है और अन्यायकर्ता अधिकारियों की पीठ थपथपा रही है। ऐसी स्थिति में मेरा ब्रिटिश सरकार के न्याय में विश्वास नहीं रहा। इसलिए मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि मुझे ब्रिटिश सरकार को सहयोग नहीं देना चाहिए। मैं अपने देशवासियों को भी यही सलाह दे रहा हूँ।'

असहयोग के कार्यक्रमों में कौंसिलों, अदालतों, स्कूलों-कालेजों और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के अतिरिक्त सरकारी पदवियों को लौटाने की बात भी थी। उस समय अंग्रेज़ सरकार अपने भक्तों को रायबहादुर, रायसाहब, खानबहादुर, खान साहब, सर आदि की पदवियाँ प्रदान किया करती थी। गांधीजी ने लोगों से सरकारी कचहरियों में न जाकर पंचायतों में अपने झगड़ों को सुलझाने की सलाह दी, विद्यार्थियों को राष्ट्रीय शालाओं और विद्यापीठों में पढ़ने को कहा, विदेशी वस्तुओं के स्थान पर खादी धारण करने का आग्रह किया, लोगों से शराब और नशीली चीज़ों का प्रयोग न करने की अपील की, सरकारी कर्मचारियों को भी नौकरी छोड़ने को प्रेरित किया। सारांश यह है कि भारतीयों को अंग्रेज़ सरकार से सर्वथा सम्बन्ध विच्छेद करने की बात सुझाई गई। संक्षेप में असहयोग-आन्दोलन का यही कार्यक्रम था।

गांधीजी ने आन्दोलन का श्रीगणेश करने के पूर्व जनता से प्रत्येक स्थिति में शांति बनाए रखने की प्रार्थना की, हिंसा के कार्यों से दूर रहने का उपदेश दिया। उस समय देश में ऐसी गुप्त क्रांतिकारी संस्थाएँ थीं, जो अहिंसा में

विश्वास नहीं रखती थीं। उनके द्वारा यदा-कदा अंग्रेज़ अधिकारियों पर घातक आक्रमण होते रहते थे। क्रांतिकारियों का विश्वास था कि हिंसा की घटनाओं से अंग्रेज़ आतंकित होकर भारतीयों को सत्ता सौंप देंगे। गांधीजी का मत इसके विपरीत था। उन्होंने अनुभव किया था कि यदि स्वराज्य आन्दोलन को जनता तक पहुँचाना है, तो उसे अहिंसा का ही रूप देना होगा। हिंसा का मार्ग जन-समूह को आकर्षित नहीं कर सकता। इसलिए वे सत्याग्रहियों को मारना नहीं, मरना सिखाते थे और जनता में हिंसा की प्रवृत्ति देखते तो आन्दोलन को स्थगित कर आत्मशुद्धि के लिए स्वयं उपवास करते थे।

गांधीजी ने असहयोग-आन्दोलन को प्रारम्भ करते ही यह घोषित किया कि यदि जनता ने मेरे सुझाए मार्ग का अवलम्बन किया, तो एक वर्ष में ही भारत को स्वराज्य प्राप्ति हो जाएगी।

उन्होंने अपने आन्दोलन का समर्थन कोलकाता कांग्रेस से प्राप्त कर लिया। कोलकाता कांग्रेस के बाद से कांग्रेस पर गांधीजी का एक प्रकार से आधिपत्य ही हो गया। जो कांग्रेस पहले अंग्रेज़ और अंग्रेज़ियत का आदर करने वाले नेताओं के इशारे पर चलती थी, वह अब जनसाधारण के प्रतिनिधि गांधीजी के इशारे पर नाचने के लिए तैयार हो गई। कांग्रेस में सादगी का वातावरण दिखाई देने लगा। कांग्रेसी जनता के बीच धरती पर बैठकर अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी में बात करने लगे और धोती, कुर्ता तथा टोपी की वेश-भूषा में रहने लगे। गांधीजी ने कांग्रेस और कांग्रेस कार्यकर्ताओं की कायापलट कर दी।

अंतर्मन मम विकसित करो हे

कोलकाता कांग्रेस के बाद गांधीजी अपना स्वास्थ्य सुधारने के लिए रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शांति निकेतन में गए। जनरव से दूर प्रकृति की गोद में स्थित यह निकेतन गांधीजी को अत्यन्त मुग्धकारी लगा। छोटी, सादी झोपड़ियों में अध्यापक, छात्र और छात्राएँ रहकर परिवार के समान जीवन-यापन करते थे। पेड़ों के नीचे अध्ययन-अध्यापन होता था। इन दृश्यों को देखकर गांधीजी को लगा, मानो प्राचीन गुरुकुल में पुनः जीवन धारण कर लिया हो। उन्हें एक बात से तो और भी हर्ष हुआ कि विश्राम के क्षणों में छात्र-छात्राओं के कण्ठों से रवीन्द्र-संगीत झरता था, वहाँ एक प्रार्थना मंदिर था, जहाँ नित्य प्रार्थना होती थी। उस समय शांति निकेतन में भारत-भक्त सी.एफ. एंड्रूज भी थे, जिन्हें गांधीजी प्यार से चार्ली

चित्र 7. अंतर्मन मम विकसित करो हे

कहा करते थे। काका कालेलकर भी वहीं थे, जो बाद में गांधीजी के आश्रम में आ गए थे।

रवि बाबू ने गांधीजी का शिक्षकों और शिक्षितों से मिलाप कराने के लिए प्रार्थना मंदिर के प्रांगण में एक सभा आयोजित की। गांधीजी एक छोटे-से आसन पर आसीन किए गए। सामने गंध-पुष्प रखे गए। वातावरण सौरभ से भर गया। शुभ्रवसना बालाओं ने कवि के इस गीत को गाया-

अंतर्मन मम विकसित करो हे,
निर्मल करो, उज्ज्वल करो,
सुंदर करो हे
जागृत करो, उन्नत करो,
निर्भय करो हे।
अंतर्मन विकसित करो, वंदित करो हे।

गांधीजी शांत भाव से बैठे रहे और अंत में धीरे-से उन्होंने छात्रों से अपनी मातृभाषा और मातृभूमि के प्रति कर्त्तव्य-पालन के सम्बन्ध में दो शब्द कहे। रवि बाबू ने 'तोमारे करि नमस्कार' गीत से सभा की समाप्ति की।

असहयोग आन्दोलन की आँधी

कोलकाता कांग्रेस के निर्णय के पश्चात् देश भर में 'असहयोग कर दो, असहयोग कर दो' की आवाज़ गूँजने लगी। स्कूल-कालेजों से विद्यार्थी हज़ारों की संख्या में निकल आए और राष्ट्रीय गीत गा-गाकर जनता में आज़ादी की आग सुलगाने लगे। कौंसिल के चुनाव में गैर-कांग्रेसी खड़े हुए और कौंसिल के सदस्य बन गए। उनमें सरकारी बिलों का विरोध करने का साहस न था। इस प्रकार कौंसिल की निस्सारता सिद्ध हो गई।

दिसम्बर, 1920 में नागपुर कांग्रेस ने भी गांधीजी के असहयोग-प्रस्ताव का समर्थन कर दिया। आन्दोलन को चलाने के लिए लोकमान्य तिलक की स्मृति में एक करोड़ का 'तिलक स्वराज्य फंड' कायम हुआ।

स्वराज्य के कई अर्थ लगाए गए, परन्तु गांधीजी उसका अर्थ 'अपना राज्य' लगाते थे। गांधीजी ने कांग्रेस कमेटियाँ कायम कीं। उन्होंने हिन्दू-मुसलमानों को परस्पर भाई-भाई के समान रहने का उपदेश दिया। अछूत कही जाने वाली जातियों को अछूत न रखने के लिए आग्रह किया। स्वराज्य का आन्दोलन जनता तक पहली बार पहुँचा था। महात्माजी ने वर्ष भर देश के कोने-कोने में दौरा किया। वे रेल, मोटरगाड़ी और बैलगाड़ी का भी यात्रा में उपयोग करते थे। जहाँ जाते, विदेशी वस्तुओं को फेंकने की बात कहते और उनके सामने ही लोग विदेशी कपड़ों का ढेर लगा देते थे। देश भर में जगह-जगह विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जाने लगी। यद्यपि सरकार ने देशभर में गिरफ्तारियों की धूम मचा दी, पर वह गांधीजी को उनकी लोकप्रियता के कारण पकड़ने से झिझकती रही।

जनता उन्हें असाधारण पुरुष मानती थी। इसलिए उनकी एक प्रकार से आराधना करने लगी थी। एक बार बिहार के एक गाँव में जब वे यात्रा कर रहे थे, तब उनकी मोटर पंचर हो गई। वे उतरकर चलने लगे। सामने एक बुढ़िया मिली, बोली- 'बेटा, मेरी उमर 104 साल की है, न जाने कब चोला छूट जाए, मैं एक बार महात्मा गांधी को

देखना चाहती हूँ।' गांधीजी ने पूछा– 'क्यों माँ, तू उसे क्यों देखना चाहती है?' बुढ़िया बोली, 'बेटा, वह भगवान का अवतार है न।'

असहयोग–आन्दोलन के काल में गांधीजी खादी का पंछा, खादी का कुर्ता और खादी की सफेद टोपी पहनते थे। उनका अनुकरण कर कांग्रेसी देशभक्त भी उन्हीं के समान खादी की सफेद टोपी पहनने लगे, जिसे बाद में लोग गांधी टोपी कहने लगे। थोड़े दिनों के बाद गांधीजी ने गरीब से गरीब जो वस्त्र पहन सकता है, उसे पहनना प्रारम्भ कर दिया। अब उनकी पोशाक थी – खादी की लंगोटी, घुटनों तक धोती और जाड़े के दिनों में खादी की शाल। वे भीतर से तो महात्मा थे ही बाहरी वेश–भूषा से भी महात्मा लगते थे।

असहयोग–आन्दोलन तेजी पकड़ता जा रहा था। शहर–शहर, गाँव–गाँव में सभाएँ होती थीं। जोशीले भाषण दिए जाते थे। राष्ट्र को जगाने वाला 'वंदेमातरम्' गीत गाया जाता था, जिससे सरकार बहुत चिढ़ती थी। लड़के और नवजवान गाते थे–

छीन सकती है नहीं सरकार वंदेमातरम्।
हम गरीबों के गले का हार वंदेमातरम्॥
सिरचढ़ों के सिर में चक्कर उस समय आता ज़रूर।
कान में पहुँची जहाँ झंकार वंदेमातरम्॥

स्वराज्य की घोषणा हुए एक वर्ष की समाप्ति का समय ज्यों–ज्यों निकट आता जाता था, नवयुवक अधीर हो जाते थे। शांतिमय असहयोग–आन्दोलन में युद्ध की गर्मी नहीं थी। वे लड़ाकू ढंग के आन्दोलन की माँग कर रहे थे। गांधीजी 'कर–बन्दी' आन्दोलन आरम्भ कर सकते थे, परन्तु उसे देशव्यापी बनाने में उन्हें हिंसा का भय था। जनता जब कर न देती तो सरकार ज़ोर–ज़ुल्म कर उसे वसूल करने की कोशिश करती। ऐसी दशा में दोनों ओर से मार–पीट की सम्भावना थी परन्तु नवयुवकों के जोश को देखते हुए उन्होंने सीमित दायरे में करबन्द आन्दोलन का प्रयोग करना चाहा और इसके लिए गुजरात के बारडोली जिले को चुना। वे आन्दोलन की तैयारी कर ही रहे थे कि उन्हें समाचार मिला कि चौरा–चौरी (उ.प्र.) में जनता और पुलिस में मुठभेड़ होने के कारण जनता ने पुलिस चौकी के साथ कुछ पुलिस कर्मचारी भी जला डाले। गांधीजी को इससे अत्यन्त दुख और निराशा हुई। उन्होंने बारडोली में सत्याग्रह प्रारम्भ करने का विचार छोड़ दिया और सारे देश में चलने वाले असहयोग–आन्दोलन को भी स्थगित कर दिया तथा आत्मशुद्धि के लिए छह दिन का उपवास भी किया।

गांधीजी को सरकार अधिक समय तक मुक्त नहीं रख सकती थी। उसने उन्हें उनके 'यंग इंडिया' में प्रकाशित लेख के आधार पर गिरफ्तार कर लिया और अहमदाबाद की अदालत में राजद्रोह का मुक़दमा चला दिया। अंग्रेज़ जज ब्रूमफील्ड ने सजा सुनाते समय ज़रा सिर झुकाकर कहा, 'आप करोड़ों लोगों की दृष्टि में महान देशभक्त और नेता हैं। जो आपसे राजनीति में मतभेद रखते हैं, वे भी आपके ऊँचे आदर्श और संत के समान जीवनचर्या के कारण आपका आदर करते हैं, कानून की रक्षा के लिए मैं आपको छह वर्ष की सादी सजा दे रहा हूँ, परन्तु यदि

परिस्थिति बदले और सरकार आपको इसके पूर्व ही छोड़ दे, तो मुझे सबसे अधिक खुशी होगी।' सरकारी अंग्रेज़, जिनकी सरकार के खिलाफ गांधीजी अहिंसात्मक लड़ाई लड़ते थे, उनका सम्मान करते थे, क्योंकि वे सत्यवादी और निश्छल महापुरुष थे।

छह वर्ष की सजा काटने के लिए गांधीजी को यरवदा जेल में रखा गया। वहाँ उन्होंने जेल के नियमों का पालन किया। चरखा के सिवाय और किसी चीज की माँग नहीं की। उन्होंने अपना समय चरखा कातने के अतिरिक्त महान लेखकों के ग्रन्थों के अध्ययन में व्यतीत किया। सभी धर्मों के ग्रन्थों के वे पारायण करते रहते थे।

एक रात उनके पेट में असह्य पीड़ा हुई। जेल में अंग्रेज सर्जन ने उनकी परीक्षा की और उसे ऐसा जान पड़ा कि यदि तुरंत शल्य-क्रिया न की गई तो उनके प्राण खतरे में पड़ सकते हैं। इसलिए उसने सरकार की अनुमति लिए बिना शल्य-क्रिया कर आँत पुच्छ काट डाला। इसके बाद भी गांधीजी का स्वास्थ्य सुधर नहीं रहा था। सरकार उन्हें जेल में मरने देना नहीं चाहती थी, अतः वे सजा पूरी होने से पूर्व ही छोड़ दिए गए। छूटने के बाद वे बंबई (मुबंई) में कुछ समय तक रहे, जहाँ उन्होंने अपना स्वास्थ्य सुधारा।

चित्र 8. यरवदा जेल

असहयोग-आंदोलन की समाप्ति के बाद कांग्रेसियों के पास उस समय एक ही कार्यक्रम रह गया था, वह था कौंसिलों में जाकर सरकार के काम में अड़ंगे डाल उन्हें भंग करने का कुछ कांग्रेस-जन कौंसिल प्रवेश के पक्ष में नहीं थे। दोनों गांधीजी से जब सलाह लेने आए, तो उन्होंने दोनों को अपना-अपना मार्ग ग्रहण करने की छूट दे दी और स्वयं रचनात्मक कार्यों में लग गए। उनके रचनात्मक कार्य थे- चरखा खादी, ग्राम-सुधार, नशाबंदी, हरिजनोद्धार, हिंदू-मुस्लिम एकता आदि।

सन् 1924 में जब देश में हिन्दू-मुसलमानों में सांप्रदायिक संघर्ष हुआ तो उन्हें आन्तरिक पीड़ा हुई। वे संघर्ष के क्षेत्र दिल्ली में गए और वहाँ मुसलमान नेता के घर रहकर उन्होंने इक्कीस दिन का उपवास किया। जब हिन्दू-मुसलमान दोनों ने भाई-भाई के समान रहने का उन्हें आश्वासन दिया, तब मुस्लिम भाई के हाथ से संतरे का रस ग्रहण कर उपवास तोड़ा। देश में जब-जब हिंसा भड़क उठती, गांधीजी उपवास द्वारा आत्म-शुद्धि किया करते।

गांधीजी ने जनता के हृदय को शुद्ध करने के लिए देशव्यापी यात्रा की। वे कहते थे, 'जब तक हम अपनी शुद्धि नही कर लेंगे, स्वराज्य के अधिकारी नहीं होंगे।' अपनी सभाओं में खादी-प्रचार और हरिजनोद्धार पर बराबर-बल देते थे और सभा की समाप्ति पर जब इन कार्यों के लिए आर्थिक सहायता की अपील करते, तब अनेक स्त्रियाँ अपने आभूषण उतारकर उन्हें भेंट कर देती थी।

गांधीजी ने यरवदा जेल से छूटने के बाद ही कहा था कि मैं कांग्रेस और राजनीति से अलग होना चाहता हूँ, परंतु कांग्रेस-जन उन्हें छोड़ना नहीं चाहते थे। सन् 1924 में बेलगाँव में कांग्रेस-अधिवेशन होने जा रहा था। कांग्रेस नेता गांधीजी को उसका सभापतित्व- स्वीकारने का जब बहुत आग्रह करने लगे, तब वे उसके लिए इसी शर्त पर तैयार हुए कि कांग्रेस को चरखा और खादी को अपनाने का कार्यक्रम स्वीकारना होगा, उसके सदस्यों को खादी पहननी होगी। साथ ही एक घंटा चरखा भी चलाना होगा। सन् 1924 से खादी कांग्रेस-सदस्यों की पोशाक बन गई, जो आज तक बनी हुई है।

सन् 1926 में जब उनकी कांग्रेस-अध्यक्षता का कार्यकाल समाप्त हो गया, तब उन्होंने एक वर्ष के लिए राजनीतिक मौन धारण कर लिया और साबरमती आश्रम में रहकर 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' पत्र द्वारा ब्रह्मचर्य, बाल-विवाह, विधवा-विवाह, अछूतोद्धार, हिन्दू-मुसलिम-एकता आदि विषयों पर अपने विचार प्रकट करते रहे।

गांधीजी ने समाज-सुधार के रचनात्मक कार्यों के सिलसिले में देश-भर में दौरा किया। जहाँ-जहाँ वे गए वहाँ-वहाँ उन्होंने अस्पृश्यता-निवारण, मद्यनिषेध और खादी पर व्याख्यान दिए। किसी-किसी दिन वे बीस-पच्चीस सभाओं में बोलते थे। एक दिन जब व्याख्यान देकर लौटे, तो बेहोश हो गए। डॉक्टर की सलाह से उन्होंने दो-तीन दिन विश्राम किया और फिर दौरा प्रारम्भ कर दिया। दौरे में उनके साथ उनकी अंग्रेज शिष्या मीरा बेन और निजी सचिव (प्राइवेट सेक्रेटरी) महादेव भाई देसाई सदा रहते थे। महादेव भाई उनके इतने निकट थे कि गांधीजी क्या सोच रहे हैं, क्या सोच सकते हैं इसे भाँप लेते थे। मीरा बेन उनकी भोजन और आवास की व्यवस्था करती थीं। उन्होंने थोड़ी-बहुत हिंदी सीख ली थी, जिससे वे गाँवों में जाकर लोगों की समस्याओं को समझने की कोशिश करती थीं।

चित्र 9. गांधीजी का चरखा-प्रेम

सभाओं में गांधीजी जब भाषण समाप्त करते, तब झोली फैलाकर दरिद्रनारायण के नाम पर दान की माँग करते और जनता नोटों, रुपयों और पैसों की वर्षा से उनकी झोली भर देती। महिलाएँ तो अपने बहुमूल्य आभूषण तक उनके सामने उतारकर दे देती।

गांधीजी प्रत्येक पैसे का हिसाब रखते थे। जो व्यक्ति हिसाब में लापरवाही बरतता, उसे वे क्षमा नहीं करते थे। एक बार दक्षिण भारत से एक कार्यकर्ता उनके पास आया और कहने लगा- 'बापू जो कुछ चंदा मिला था, मैंने उसे ठीक जमा किया है, उसमें से एक पैसा भी नहीं उठाया, फिर भी हिसाब जाँचने वाले ने मुझ पर एक हजार रुपया लेना बताया। मैं सच कहता हूँ मैंने कोई गड़बड़ी नहीं की है। अब मैं क्या करूँ?' गांधीजी ने कहा- 'यदि

तुमने हिसाब ठीक नहीं रखा है तो मैं क्या करूँ? तुम्हें हजार रुपया भरना होगा।' उसने गिड़गिड़ाकर कहा– 'बापू मेरे पास तो घर लौटने के लिए एक कौड़ी भी नहीं है।'

'तो पैदल जाओ। मैं तुम्हें कोई सहायता नहीं दे सकता।'

बापू का स्वभाव फूल-सा कोमल था और वज्र-सा कठोर भी। हिसाब-किताब में या अन्य नैतिक आचरणों में ढिलाई करने वाले के प्रति वे जरा भी दया नहीं दिखलाते थे।

'यात्रा में अधिक परिश्रम के कारण उनका रक्तचाप बढ़ जाया करता था। इस बार भी जब वे बहुत कमजोर हो गए तो डॉक्टरों की सलाह से विश्राम करने के लिए मैसूर चले गए।'

एक दिन जब गांधीजी मैसूर में विश्राम कर रहे थे, तभी एकाएक वाइसराय लार्ड इर्विन का पत्र उन्हें मिला जिसमें उन्हें दिल्ली बुलाया गया था। गांधीजी जब दिल्ली गए तो, इर्विन ने उन्हें अपने कमरे में बैठाकर एक टाइप किया हुआ पत्र दिया। उसमें लिखा था कि ब्रिटिश सरकार भारत को शासन सुधार की दूसरी किस्त देने के पूर्व परिस्थिति का अध्ययन करने के लिए एक कमीशन भेजना चाहती है।

कागज गांधीजी के हाथ में देकर इर्विन उनकी ओर देखने लगे, यह जानने के लिए उन पर पत्र का क्या असर हुआ। गांधीजी ने इर्विन की ओर देखकर कहा– 'क्या और भी कुछ काम है।' इर्विन ने कहा– 'नहीं'।

गांधीजी चुपचाप वाइसराय की कोठी से अपने निवास स्थान पर लौट आए। ब्रिटिश सरकार ने जो कमीशन नियुक्त किया था, उसमें एक भी भारतीय सदस्य के रूप में शामिल नहीं किया गया था। कांग्रेस के नेताओं को ऐसा प्रतीत हुआ कि अंग्रेज-सरकार की नियत स्वराज्य देने की नहीं है। वह कमीशन के द्वारा खिलाफ रिपोर्ट प्राप्त कर बात को टाल देना चाहती है।

इस कमीशन का भारत के सभी दलों ने विरोध करने कर निश्चय किया। कमीशन के प्रमुख साइमन थे, इसलिए इसका नाम साइमन कमीशन पड़ा। जब 3 फरवरी,1928 को वह बंबई(मुबंई) पहुँचा, तब उसे कहीं भी स्वागत के चिह्न नहीं दिखाई दिए। दिखाई दिए साइमन गो बेक (साइमन वापस जाओ) के पोस्टर और सुनाई पड़े 'साइमन गो बेक' शब्द। जो अंग्रेजी नहीं जानते थे, वे भी तीन शब्द सीखकर– 'साइमन गो बेक' चिल्लाने लगे। कमीशन जहाँ गया, काले झंडे और विरोधी नारों से उसका स्वागत किया गया। किसी प्रतिष्ठित भारतीय ने उससे भेंट नहीं की, परंतु पुलिस ने स्थान-स्थान पर विरोध जुलूसों पर लाठियों की वर्षा अवश्य की। लाहौर में विरोध जुलूस का नेतृत्व करने वाले कांग्रेस नेता लाला लाजपतराय पर भी लाठियों का घातक प्रहार किया गया, जिससे कुछ समय बाद उनकी मृत्यु हो गई भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के बाल, लाल और पाल की त्रयी मशहूर थी। बाल– बाल गंगाधर तिलक, पाल– विपिन चंद पाल और लाल से लाला लाजपतराय का आशय था। सरकार की दमन– नीति से जनता गांधीजी से पुनः सत्याग्रह आंदोलन की माँग करने लगी।

चलो बारडोली

बारडोली में सरकार लगान के कानून में बाईस प्रतिशत की बढ़ोत्री करना चाहती थी। किसानों को यह बहुत

अधिक लगी। स्थानीय नेताओं ने किसानों की कठिनाई सरकार को समझाने की कोशिश की, परंतु वह अपने निर्णय को बदलने के लिए तैयार नहीं हुई। वल्लभभाई पटेल ने गांधीजी से सत्याग्रह प्रारंभ करने की अनुमति चाही। गांधीजी ने उन्हें लगानबंदी के आंदोलन को प्रारंभ करने की अनुमति दे दी। वल्लभभाई ने बारडोली तहसील में किसानों को लगान न चुकाने की प्रेरणा दी और किसानों के घर कुर्की जाने लगी। कुर्की करने वाले उनके घर का सामान उठा ले जाते और गाय, ढोर, भैंस भी ले जाते, किंतु जब सामान या ढोरों की नीलामी बोली जाती, तो कोई खरीददार सामने न आता था। ऐसी दशा में सरकारी कर्मचारी ही चार-छह आने में गाय-भैंस खरीद लेते थे। किसानों के खेत भी इसी प्रकार सस्ते दामों में बेच दिए गए। ज्यों-ज्यों सरकार का दमन बढ़ता जाता, त्यों-त्यों आंदोलन की तेजी बढ़ती जाती। इस आंदोलन की ओर सारे देश का ध्यान खिंच गया। स्थान-स्थान पर सभाएँ होतीं, जिनमें किसानों पर होने वाले अत्याचारों पर भाषण होते थे और 'चलो- बारडोली' के नारे लगाए जाते थे। सत्याग्रह को देश भर से सहायता पहुँचने लगी थी। अनुमान है कि सत्तासी हजार लोगों ने लगान न देकर सत्याग्रह में भाग लिया। सत्याग्रह साढ़े तीन महीने तक चलता रहा। सत्याग्रहियों की सहानुभूति में देश भर में बारडोली दिवस मनाया गया। आश्चर्य की बात यह है कि कहीं से भी हिंसा का समाचार प्राप्त नहीं हुआ, जनता के जोश के आगे सरकार झुकी और उसने जाँच-कमीशन बैठाकर किसानों के पक्ष में रिपोर्ट प्राप्त कर ली और लगान-वृद्धि का कानून रद्द कर दिया। जब्त जमीन लौटा दी गई। जो पशु बेच दिए गए थे, उनका मुआवजा दिया गया। सत्याग्रहियों की रिहाई कर दी गई।

सत्याग्रह की यह पूर्ण विजय कही जा सकती है। इसका सफल संचालन करने के कारण जनता ने वल्लभभाई को सरदार की उपाधि प्रदान की। तभी से वे 'सरदार वल्लभभाई पटेल' कहलाने लगे। गांधीजी के नेतृत्व में जनता का दुगना विश्वास बढ़ गया।

बारडोली की सफलता से उत्साहित हो तरूण पीढ़ी गांधीजी से कांग्रेस पूर्ण स्वातंत्र्य के प्रस्ताव को कार्यान्वित करने के लिए किसी प्रभावकारी आंदोलन की माँग करने लगी। देश का वातावरण बहुत क्षुब्ध हो रहा था। हिंसा में विश्वास रखनेवाले तरूण रक्त क्रांति का स्वप्न देख रहे थे। वे देश से अंग्रेजी शासन को समाप्त कर मजदूर-किसानों का राज्य स्थापित करना चाहते थे। सरकार ने साम्यवादी विचाराधारा से प्रभावित व्यक्तियों को पकड़कर उन पर षड़यंत्र के मुकदमे चलाए। उनमें मेरठ षड़यंत्र केस ने बड़ी प्रसिद्धि पाई। कुछ क्रांतिकारियों ने वाइसराय लार्ड इर्विन की स्पेशल ट्रेन को बम से उड़ाने की असफल कोशिश भी की। वे सरकारी खजाने लूटते, शस्त्रगारों पर आक्रमण करते और कथित अत्याचारी अंग्रेजी अधिकारियों की सफल-असफल हत्या के प्रयत्न करते परिणामस्वरूप वे फाँसी के तख्ते पर झूलते अथवा आजन्म कारावास का दंड भोगते थे। रह-रहकर घटित होने वाली हिंसा की घटनाओं के कारण गांधीजी किसी देशव्यापी आंदोलन को शीघ्र ही प्रारंभ करने के पक्ष में नहीं थे। परतुं प्रबल जनमत की बहुत समय तक अवहेलना भी कैसे की जा सकती थी? इसी बीच इंग्लैड में मिली-जुली सरकार कायम हो गई थी और मजदूर दल के नेता मेक्डोनल्ड प्रधानमंत्री के पद पर आसीन हुए थे। इनकी

सहानुभूति भारत के स्वातंत्र्य-आंदोलन के पक्ष में थी। इसलिए इन्होंने सर्वदलीय नेताओं को आमंत्रित कर एक गोलमेज परिषद बुलाने का प्रस्ताव रखा। गांधीजी ने इस बैठक में भाग नहीं लिया। वे देश को संगठित करने के प्रयत्न में लग गए।

विदेशी वस्त्रों की होली

गांधीजी ने इस बार विदेशी वस्त्र-बहिष्कार-आंदोलन को प्रमुखता दी। वे अपने प्रत्येक सभा के अंत में विदेशी वस्त्रों को एकत्र कराते और उनमें अपने हाथ से दियासलाई लगाते थे। बंबई(मुंबई) की एक सभा में उन्होंने विदेशी वस्त्रों की होली अपने हाथ से जलाई तो उनके भक्त एंड्रुज ने उनसे कहा, 'महात्माजी, आप सुंदर चीजों को क्यों नष्ट कर रहे हैं? यदि आप इन्हें पसंद नहीं करते तो वस्त्रहीन गरीबों को क्यों नहीं बाँट देते? गांधीजी ने हँसते हुए कहा- 'चार्ली, तुम नहीं जानते कि मैं होली-कांड क्यों रचता हूँ। मैं जवानों के जोश को हिंसक कार्यों से हटाने के लिए यह कार्य करता हूँ। इससे उनकी नष्ट करने की प्रवृत्ति संतुष्ट हो जाती है और जिस चीज को मैं स्वयं पसंद नहीं करता, उसे दूसरों को कैसे दे सकता हूँ।' चार्ली गांधीजी के तर्क से संतुष्ट हुए हों या न हुए हों, पर वे मुस्कराकर मौन रह गए।

कोलकत्ता के श्रद्धानंद पार्क में गांधीजी ने जब जनता से विदेशी वस्त्र को फेंक देने की बात कही, तो चारों ओर से वस्त्र फिकने लगे और उनका विशाल ढेर लग गया। गांधीजी उनमें दियासलाई लगाने ही वाले थे कि पुलिस कमिश्नर सामने आ गया और कहने लगा कि कानून के अनुसार सार्वजनिक पार्क में ऐसे कार्य वर्जित हैं। गांधीजी ने उसकी आपत्ति की कोई परवाह न की, ढेर में दियासलाई लगा ही दी। विदेशी वस्त्र धू-धू जलने लगे। कमिश्नर के आदेश से पुलिस के सिपाहियों ने दौड़कर आग बुझाने की चेष्ठा की। कमिश्नर ने स्वयं गांधीजी को कानून-भंग के अपराध में गिरफतार कर लिया। जब उन्हें मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया, तो उसने उन्हें एक रुपया जुर्माने की सजा देकर छोड़ दिया।

साम्यवादी आंदोलन के कारण देश के भिन्न-भिन्न स्थानों में मजदूरों की हड़तालें होने लगीं। बंगाल में उनका जब जोर ज्यादा बढ़ा तो बंगाल सरकार के बिना मुकदमा चलाए कई नेताओं को जेल में डाल दिया गया। अन्य प्रांतों में भी मजदूर नेताओं पर बड़ी भारी संख्या में मुकदमे चलाए गए और सजाएँ दी गईं। लाहौर में कुछ लड़कों ने साम्राज्यवाद का नाश हो,'क्रांति जिंदाबाद', 'टोरी -बच्चा हाय-हाय' आदि के जब नारे लगाए, तो उन्हें बुरी तरह पीटा गया। इन घटनाओं से देश भर में क्षोभ फैल गया। सरकार दिल्ली की असेंबली में देश-रक्षा कानून पास करना चाहती थी। इसके अंतगर्त व्यक्तियों को बिना मुकदमा चलाए जेल में रखा जा सकता था। जब यह बिल असेंबली में पेश किया जा रहा था, तभी असेंबली-दीर्घा से सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने नीचे बम फेंक दिया और क्रांति के नारे लगाए तथा स्वयं को गिरफतार करवा लिया। बाद में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को हिंसा के अन्य मामलों में सजाएँ हुई। भगतसिंह को फाँसी दी गई और दत्त को आजीवन कारावास। गांधीजी ने भगतसिंह को फाँसी से बचाने का असफल प्रयत्न भी किया था।

देश में स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए आंदोलन कई रूपों में चल रहे थे। दिसंबर 1929 में लाहौर में रावी तट

पर काँग्रेस का अधिवेशन हुआ, जिसमें पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास हुआ। 26 जनवरी 1930 को देश भर में स्वाधीनता दिवस मनाया गया। गांधीजी साबरमती लौट गए और उन्होंने नमक कानून तोड़ने के रूप में सत्याग्रह-आंदोलन प्रारंभ करने का निश्चय किया।

दांडी यात्रा

गांधीजी 12 मार्च, 1930 को नमक कानून तोड़ने के लिए चुने हुए आश्रमवासियों के साथ समुद्र के किनारे दांडी नामक स्थान की ओर रवाना हुए। आश्रमवासी स्वयंसेवकों की संख्या अठत्तर थी। प्रस्थान के समय अहमदाबाद की महिलाओं ने तिलक लगाया, आरती उतारी। गांधीजी के हाथ में लाठी, शरीर पर घुटनों तक धोती और पैरों में चप्पल थी। वे लंबे-लंबे डग भरते हुए तेजी से चलते थे। पहले ही दिन उन्होंने धूप और सड़क की धूल खाते हुए सोलह किलोमीटर की यात्रा तय कर ली। उनका पहला पड़ाव असलाली गाँव में हुआ, जहाँ सैकड़ों ग्रामवासियों ने पुष्पहारों और वाद्य ध्वनियों (बाजे-गाजे) से उनका स्वागत किया। वे हमेशा अपने भाषणों में जनता को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देते थे। यहाँ भी उन्होंने यही किया। इकसठ वर्ष के बूढ़े महात्मा का जोश देखकर नए जवान भी लजा जाते थे। दांडी-यात्रा तीर्थ-यात्रा के समान लगती थी, जो चौबीस दिनों में पूरी हुई। यह तीन सौ किलोमीटर की यात्रा थी।

चित्र 10. गांधीजी की दांडी-यात्रा

यात्रा के दौरान सत्याग्रही प्रातः राब, काँजी अथवा नमकीन मोटी रोटी का नाश्ता कर चल पड़ते थे। दोपहर के पूर्व निश्चित गाँव में भोजन के लिए रुकते थे। दोपहर के भोजन में मोवन डली रोटी, सब्जी, मठा या दूध होता था। रोटी थोड़ी घी से चुपड़ दी जाती थी। भोजन के पश्चात सत्याग्रही थोड़ा विश्राम करते थे और दिन ढलने के पहले आगे की यात्रा प्रारंभ कर देते थे और अगले किसी ग्राम में रात बिताते थे। रात का भोजन खिचड़ी, सब्जी, दूध या मठा होता था। गांधीजी के भोजन में खजूर, किशमिश, नीबू और बकरी का दूध रहता था। ग्रामवासी बड़े उत्साह के साथ गांधीजी और सत्याग्रहियों को भोजन कराते और उनके आराम की चिंता करते थे। चाय और पान आदि का सेवन निषिद्ध था।

प्रत्येक विश्राम के गाँव में महात्माजी सामूहिक प्रार्थना करते और ग्रामवासियों से छूआछूत को दूर करने तथा

भगवान में विश्वास रखने का उपदेश देते थे। कहीं-कहीं ग्रामवासी सरकारी कर्मचारियों को खाने-पीने का सामान न देकर उनका बहिष्कार करते थे। गांधीजी को जब यह बात ज्ञात हुई तो उन्होंने यहाँ तक कहा कि जिस डायर ने पंजाब में अनेक अत्याचार किए हैं, वह यदि मुझे गोली मार दे और मैं बेहोशी की हालत में सुन लूँ कि उसे जहरीले साँप ने काटा है तो मैं उसका जहर चूसने को दौड़ जाऊँगा।

गांधीजी की मानवता के आगे शत्रु का भी सिर झुक जाता था। वे किसी को शत्रु मानते ही न थे।

'स्वराज्य सवारी आवी छे'

गांधीजी अपने सत्याग्रही स्वयंसेवकों के साथ जब गाँव से गुजरते थे, तब गुजराती स्त्रियाँ स्वराज्य के गीत गातीं थीं-

'आवी छे आवी छे, स्वराज्य सवारी आवी छे।

जयनाद गगन माँ माजे छे, स्वराज्य सवारी आवे छे।'

(स्वराज्य की सवारी आ रही है, आ रही है, आकाश में जयनाद गूँज रहा है, स्वराज्य की सवारी आ रही है।) बापू कहीं-कहीं नंगे पैर चलने लगते थे। इसलिए जनता रास्ते के कंकड़ साफ करती, उन पर पानी छिड़कती और पत्ते बिछाती थी। ऐसा लगता था, मानो कोई ऋषि अपने शिष्यों के साथ तपोभूमि की ओर प्रस्थान कर रहा है।

जब सत्याग्रही 5 अप्रैल की रात को दांडी पहुँचे, तब हज़ारों स्त्री-पुरुष इकट्ठे हो गए और उन्होंने जागते-जागते रात बिताई। सत्याग्रही प्रातः उठे, उन्होंने प्रार्थना की और समुद्र की लहरों में स्नान किया। गांधीजी ने ठीक 6 बजकर 20 मिनट पर समुद्र-किनारे के एक गड्ढे से नमक उठाकर कानून भंग किया। स्वयंसेवकों ने भी उनका अनुकरण किया। पुलिस खड़ी-खड़ी तमाशा देखती रही। उसने गांधीजी को गिरफ्तार नहीं किया।

गांधीजी के नमक-कानून तोड़ने का समाचार ज्यों ही देशभर में फैला, त्यों ही स्थान-स्थान पर नमक-सत्याग्रह प्रारम्भ हो गया। कई स्थानों पर सरकार ने सत्याग्रहियों को लाठी से पीटा और गोलियों से भी भूना। देश-भर में गिरफ्तारियों का ताँता बँध गया, परन्तु जनता का उत्साह कम होने की बजाय बढ़ता ही गया।

जब गांधीजी को दांडी में नहीं पकड़ा गया तो उन्होंने धरासणा के नमक भण्डारों पर धरने की तैयारी की और अपने स्वयंसेवकों को वहाँ भेज दिया। गांधीजी को सरकार ने धरासणा नहीं जाने दिया। जाने के पूर्व ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

जब सत्याग्रही धरासणा नमक भण्डार पर पहुँचे तो पुलिस ने उन पर क्रूरता से लाठी प्रहार किया। उन्हें ठोकर मार-मारकर भगाने की कोशिश की, परन्तु सत्याग्रही शांति से प्रहार सहते रहे और अपने स्थान से ज़रा भी नहीं डिगे। देश भर में लाखों की संख्या में स्त्री-पुरुष जेल गए। जब सरकार ने देखा कि उसका कामकाज ठप्प होने को है, तो वह झुकी और वाइसराय ने यरावदा जेल से गांधीजी को आमंत्रित किया। देश के प्रमुख नेता भी उसी समय छोड़ दिए गए। वाइसराय ने कांग्रेस से समझौता किया। समझौते के अनुसार नमक-कानून रद्द करने और सभी सत्याग्रहियों को छोड़ने के लिए सरकार राजी हो गई।

अनुदार-दल के प्रतिनिधि मि. चर्चिल ने इंग्लैंड में इस समझौते के विरुद्ध पार्लियामेंट में आवाज़ उठाई। उसने ज़ोश के साथ कहा, 'यह बागी फकीर, अधनंगा गांधी वाइसराय की कोठी पर जाता है और ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि वाइसराय से बराबरी की हैसियत से समझौता करता है। इसे मैं बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर सकता।'

समझौते के बाद सत्याग्रही छोड़ दिए गए तो गांधीजी ने भी सत्याग्रह स्थगित कर दिया।

लंदन में सरकार ने पुनः गोलमेज परिषद् आयोजित की, जिसमें गांधीजी और देश के कुछ नेता आमंत्रित किए गए। गांधीजी कांग्रेस-प्रतिनिधि के रूप में लंदन गए और उसी नंगे फकीर के वेश में। जनता उन्हें कुतूहल से देखती थी। वे कड़ाके की सर्दी में खादी की शाल ओढ़े, चप्पल पहने हुए तेजी से प्रातः जब घूमने निकलते तो एक दृश्य-सा बन जाता। लड़के-लड़कियाँ चीख उठते - 'बाप रे बाप! इतनी कड़ी ठण्ड में यह बूढ़ा कैसे ज़िन्दा रहेगा, गर्म कपड़े क्यों नहीं पहनता? अरे गांधी, तुम्हारा पैंट कहाँ हैं?' वे जिस सड़क से निकलते, भीड़ उनके पीछे लग जाती। गांधीजी लंदन में तीन महीने रहे और जनता को अपने सादे जीवन से आकर्षित करते रहे, वे उसे भारत की स्थिति और उसकी स्वाधीनता की माँग समझाते रहे।

गोलमेज परिषद् की समाप्ति पर सम्राट जार्ज ने प्रतिनिधियों से मिलने की इच्छा प्रकट की। लोगों ने गांधीजी को अपनी पोशाक बदलने की सलाह दी, परन्तु उन्होंने कहा, 'मैं सम्राट से मिलना छोड़ सकता हूँ, अपनी पोशाक नहीं।' अतः वे अपनी खादी की ही पोशाक में सम्राट के महल में गए और उनसे हाथ मिलाया और अपनी सीधी-सादी भाषा में भारत की स्थिति पर दो शब्द कहे।

गांधीजी ने बंबई (मुंबई) पहुँचते ही सरकार द्वारा पुनः दमन-चक्र चलाने के समाचार सुने। पुराने वाइसराय इर्विन के स्थान पर नए वाइसराय लार्ड विलिंगडन की नियुक्ति हो गई थी। वे गांधी-विरोधी थे, इन्होंने गांधी-इर्विन समझौते को तोड़ने की क्रिया प्रारम्भ कर दी और 4 फरवरी, 1932 को पुनः गांधीजी को पकड़कर यरवदा जेल में बन्द कर दिया। वहाँ गांधीजी ने अपना दैनिक कार्यक्रम जारी रखा। वे चरखा कातते, प्रार्थना करते और विविध विषयों का अध्ययन करते थे। स्वावलम्बी होने के कारण वे अपने कपड़े स्वयं धोते थे।

ब्रिटिश सरकार ने भारत के आन्दोलन को शांत करने की दृष्टि से नया संविधान तैयार किया, जिसमें विधानसभा में हिन्दू-मुसलमानों के पृथक निर्वाचन का विधान था। गांधीजी को अंग्रेजों की विभाजन-नीति से बड़ी वेदना हुई। सरकार हरिजनों को हिन्दू समाज से पृथक करना चाहती थी। यह गांधीजी के लिए असह्य बात थी। उसे दूर कराने के लिए गांधीजी को एक ही उपाय सूझ पड़ा और वह था आमरण उपवास। गांधीजी ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री को लिखा कि संविधान में हरिजनों के पृथक निर्वाचन का जो विधान रखा गया है, उसे निकाल दिया जाना चाहिए, क्योंकि इससे हिन्दू समाज खण्डित हो जाएगा। सरकार ने जब गांधीजी की प्रार्थना पर ध्यान नहीं दिया, तो उन्होंने आमरण उपवास प्रारम्भ कर दिया। गांधीजी ने कहा- 'मैं ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध नहीं हूँ। मैं हिन्दू-समाज को जागृत करने की दृष्टि से अपने प्राणों की आहुति देना चाहता हूँ।' जिस दिन गांधीजी ने उपवास किया, उस दिन देश में लाखों लोगों ने उपवास रखा था। नेताओं ने हरिजनों के प्रतिनिधि डॉ. अंबेडकर को समझा-बुझाकर उनसे पृथक

निर्वाचन अमान्य करा दिया। इसकी सूचना ब्रिटिश सरकार को भेज दी गई। गांधीजी उपवास से काफी दुर्बल हो गए। क्षण-क्षण उनकी हालत गिरती जा रही थी। ब्रिटिश सरकार पर गांधीजी के अंग्रेज मित्र दबाव डाल रहे थे। ब्रिटिश सरकार भी जेल में उन्हें मरने नहीं देना चाहती थी। उसने प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और उन्हें जेल से छोड़ दिया।

जेल से छूटने के बाद से द्वितीय महायुद्ध के आरम्भ होने तक गांधीजी सक्रिय राजनीति से अलग रहे। उन्होंने ग्राम-सुधार, हरिजन उद्धार, नई तालीम (बुनियादी शिक्षा) आदि रचनात्मक कार्यों में योगदान जारी रखा।

ग्राम-सुधार

कहा जाता है और ठीक कहा जाता है कि भारतवर्ष ग्रामों में बसा है। गांधीजी इंग्लैंड में थे तब किसी ने उनसे पूछा, 'मैं भारत की सेवा करना चाहता हूँ आप बतलाइए मैं क्या करूँ।' गांधीजी ने तुरन्त कहा- 'गाँवों में जाओ, वहाँ की गंदगी दूर करो, लोगों को सफाई से रहना सिखलाओ और उन्हें आत्मनिर्भर बनाओ।

गांधीजी भारत में एक आदर्श ग्राम का निर्माण करना चाहते थे। वर्धा के सेठ जमनालाल बजाज उनके अनन्य भक्त थे। गांधीजी उनको पुत्र के समान मानते थे। उन्होंने गांधीजी से वर्धा के पास सेगाँव को आदर्श गाँव बनाने की प्रार्थना की। गांधीजी और उनकी अंग्रेज शिष्या मीरा बेन जब सेगाँव गए, तो उन्होंने देखा कि वास्तव में वह बहुत पिछड़ा हुआ है। लोग स्वच्छता का नाम भी नहीं जानते। अज्ञान के कारण आधी से अधिक जनसंख्या किसी न किसी रोग से बीमार रहती है। उन्होंने सेगाँव में रहना स्वीकार कर लिया। उनके लिए घास, बाँस, लकड़ी और मिट्टी से एक छोटी-सी कुटिया भी बना दी गई और उसी के आसपास उनके साथियों के रहने के लिए दूसरी कुटिया भी बना दी गई। गांधीजी ग्रामीणों के समान ही गर्मी-सर्दी का दुख-सुख भोगना चाहते थे, उन्हीं के समान जीवन व्यतीत करना चाहते थे।

गांधीजी ने वहाँ पहुँचने के बाद गाँव की गंदगी दूर करने का कार्यक्रम हाथ में ले लिया। वे स्वयं अपने साथियों के साथ गाँव की सफाई में योगदान करते थे। उनके आश्रम में रहने वालों को अपना काम स्वयं करना पड़ता था। उन्हें अपने हाथ से भोजन बनाना, बर्तन साफ करना, कपड़े धोना और मैला भी साफ़ करना पड़ता था। आश्रमवासियों के लिए कार्य अनिवार्य थे। जो व्यक्ति आश्रम में रहना चाहता था, उसको तभी रहने की अनुमति मिलती थी, जब वह पाखाना साफ करने के लिए तैयार होता था। सेगाँव का नाम बाद में सेवाग्राम हो गया।

आश्रम में गांधीजी की दिनचर्या अखण्डित और निश्चित रहती थी। वे प्रतिदिन तीन बजे उठते, संसार भर से प्राप्त चिट्ठियों का यथासम्भव सार रूप में उत्तर देते और चार बजे के लगभग प्रार्थना कर खुली हवा में टहलने के लिए निकल जाते थे। बहुत से दर्शनार्थी और प्रश्नोत्तरार्थी टहलते समय साथ हो लेते थे। इससे उनका बहुत-सा समय बच जाता था, वे समय का बहुत ध्यान रखते थे।

टहलकर लौट आने के पश्चात् वे मालिश कराते और टब में स्नान करते थे। उसके बाद खजूर या किसी एक फल के साथ बकरी का दूध लेकर नाश्ता करते थे। नाश्ता करने के बाद चरखा चलाते और तत्पश्चात् आश्रम में

बीमार लोगों की सेवा करने पहुँच जाते। वे रोगियों की प्राकृतिक प्रणाली में चिकित्सा करते थे, भोजन में फलादि देते और ज़रूरत पड़ने पर उपवास भी कराते थे। प्राकृतिक चिकित्सा में उनका अटूट विश्वास था और औषधियों में उनका अटूट अविश्वास। उन्हें किसी भी रोग से भय नहीं लगता था। वे कोढ़ियों की सेवा भी प्रसन्नता से करते थे। एक विद्वान श्री परचुरे शास्त्री, जिन्हें कोढ़ हो गया था, आश्रम में रहते थे। गांधीजी ने उनकी सेवा का भार अपने ऊपर ले लिया था। वे उनके घावों को धोते, शरीर में मालिश करते और अन्य उपचार करते थे। आश्रम निवासी बीमार हो जाने पर गांधीजी से चिकित्सा कराने को उत्सुक रहते थे, क्योंकि इससे उन्हें उनके नज़दीक आने में सुविधा हो जाती थी और गांधीजी को भी प्रसन्नता होती थी।

गांधीजी आदर्श ग्राम की कल्पना करते थे। उनका आग्रह था कि आदर्श ग्राम में ग्रामवासियों को अपने अनाज तैयार कर भोजन की और कपास बोकर वस्त्र की सहायता हल कर लेना चाहिए। पशुओं के लिए चारागाह होना चाहिए। बच्चों के लिए खेल का मैदान और मनोरंजन के लिए कोई स्थान सुरक्षित रखना चाहिए। यदि गाँव के साथ अधिक ज़मीन लगी हो तो उसमें ऐसी फसल उगाई जाए, जिससे अन्न हो सके परन्तु तम्बाकू, अफीम आदि स्वास्थ्यनाशक वस्तुएँ न उगाई जाएँ। गाँव में एक थिएटर, स्कूल और सार्वजनिक हॉल की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

गाँव के हर काम सहकारी सिद्धान्त पर हों यानी लोगों को मिल-जुलकर काम करना चाहिए। गाँव को आधुनिक बनाने के लिए बिजलीघर की स्थापना की जा सकती है।

आदर्श ग्राम में अराजकता नहीं होगी। लोग कानून-व्यवस्था का आदर करेंगे। अपराधियों को शरीर का दण्ड न देकर उनके भीतर संस्कार को सुधारने की कोशिश की जाएगी। लोग सादा जीवन व्यतीत करेंगे। गांधीजी आदर्श ग्राम में अपने जीवन-सिद्धान्तों को प्रतिबिम्बित देखना चाहते थे।

गांधीजी के शिक्षा सम्बन्धी विचार

गांधीजी उद्योगी शिक्षा के पक्षपाती थे, जो छात्रों को आत्मनिर्भर बनाती है। उन्होंने शिक्षा के निम्नलिखित आदर्श स्थिर किए थे :-

1. शिक्षक की देख-रेख में शिक्षार्थियों को शारीरिक कार्य में लगाना चाहिए।
2. प्रत्येक लड़के और लड़की की रुचि जानकर उसे उसकी रुचि का काम देना चाहिए।
3. समझने की योग्यता हो जाने पर अक्षर-ज्ञान के पूर्व सामान्य ज्ञान कराना चाहिए।
4. उसे प्रारम्भ से ही शुद्ध अक्षर लिखना सिखाना चाहिए।
5. लिखने से पहले बच्चे को पढ़ना सिखाना चाहिए।
6. बच्चे को बातचीत द्वारा ज्ञान प्राप्त कराया जाए, अर्थात् शिक्षक ज्ञान की बातें बोलकर विद्यार्थियों को समझाने की कोशिश करें।
7. बच्चों को जबरदस्ती कुछ न सिखाया जाए। जो पढ़ें, उसमें उन्हें आनन्द आना चाहिए।
8. शिक्षा खेल के समान लगनी चाहिए। खेल भी शिक्षा का एक अंग है।

9. शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जाए।
10. अक्षर-ज्ञान के पहले बच्चों को राष्ट्रभाषा हिन्दी की इतनी शिक्षा दी जाए कि वे उसे बोल-समझ सकें।
11. धार्मिक शिक्षा अनिवार्य हो, पर यह पुस्तक से नहीं शिक्षक के आचरण और उसके मुख से दी जानी चाहिए।
12. सोलह वर्ष की अवस्था के बाद शिक्षा का दूसरा काल प्रारम्भ होता है। हिन्दू बालक को संस्कृत का और मुसलमान बालक को अरबी का ज्ञान दिया जाना चाहिए। शारीरिक कार्य के साथ-साथ अक्षर ज्ञान बढ़ाया जाए।
13. बालक को माता-पिता के धंधे की शिक्षा दी जानी चाहिए, जिससे वह अपने पारिवारिक धंधे को अपना सके।
14. सोलह वर्ष तक के लड़के-लड़कियों को दुनिया के इतिहास, भूगोल, वनस्पति शास्त्र, गणित, ज्यामिति और बीजगणित का ज्ञान हो जाना चाहिए। लड़कियों को रसोई बनाने और सीने-पिरोने का भी ज्ञान कराया जाए।
15. नौ वर्ष के बाद शुरू होने वाली शिक्षा स्वावलम्बी होनी चाहिए, अर्थात् विद्यार्थी पढ़ते समय ऐसा उद्योग करे, जिससे पढ़ाई का खर्च निकल जाए। शिक्षकों में सेवानिवृत्ति होनी चाहिए। वे चरित्रवान हों। अंग्रेजी की पढ़ाई भाषा के रूप में हो सकती है। उसे पाठ्यक्रम में स्थान मिलना चाहिए, पर उसका अनिवार्य रहना आवश्यक नहीं है।

बुनियादी शिक्षा : नई तालीम

महात्माजी प्रचलित शिक्षा-प्रणाली से सन्तुष्ट नहीं थे। वे आदर्श शिक्षा उसे मानते थे, जिसके द्वारा व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और आर्थिक विकास हो। वे बच्चों को हस्त-कौशल की शिक्षा देने पर अधिक बल देते थे, क्योंकि उसके ज़रिए बच्चा कई विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। उनका कहना था कि यदि बच्चा कताई के काम सीख ले, तो वह चरखे की बनावट, उसके चक्के और नली को देखकर ज्यामिति के वर्ग, वृत्त तथा रेखाओं का ज्ञान प्राप्त कर लेगा। उसको लकड़ी और कपास की पैदावारी की सारी बातें मालूम हो जाएँगी। उसमें कौतूहल जाग जाने से वह प्रत्येक बनाई जाने वाली चीज़ के माध्यम से भूगोल, इतिहास आदि का भी ज्ञान प्राप्त कर लेगा। अफ्रीका में गांधीजी दस्तकारी के माध्यम से बच्चों को विविध विषयों का ज्ञान करा चुके थे। वापस लौटकर उन्होंने अपने साबरमती आश्रम में बच्चों को अपने सिद्धान्तों के अनुसार बुनियादी शिक्षा देना प्रारम्भ कर दिया था। इस शिक्षा से गांधीजी दो उद्देश्य पूरे करना चाहते थे-

1. बच्चा अपनी कमाई से फीस चुका सके, और
2. उसके शरीर, मन और आत्मा का पूर्ण विकास हो सके।

गांधीजी का यह मत था कि नई तालीम की पद्धति से शिक्षक भी अपना वेतन अर्जित कर सकता है। उसका आदर्श यह होना चाहिए कि पढ़ने और पढ़ाने का वातावरण ही न रहे। यदि कोई पूछे कि लड़के क्या कर रहे हैं, तो यह कहा जाए कि वे खेत में काम कर रहे हैं या रोगी की सेवा कर रहे हैं या सफाई कर रहे हैं आदि। इन सब कार्यों से वे ज्ञान ही तो प्राप्त करते हैं। गांधीजी किताबी ज्ञान की अपेक्षा अपने अनुभव से प्राप्त ज्ञान को अधिक महत्त्व देते थे। बड़ी अवस्था के विद्यार्थियों को वे रचनात्मक कार्य में लगाना चाहते थे। उनका मत था कि वे राजनीति का अध्ययन तो करें, पर राजनीतिज्ञों की दलदली नीतियों के शिकार न हों। उन्हें हरिजन तथा आदिवासी आदि पिछड़ी जातियों के सुधार सम्बन्धी कार्यों में सहयोग देना चाहिए। ग्राम की स्वच्छता और उसकी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति में सहयोग देना उनका कर्त्तव्य होना चाहिए।

हरिजनोद्धार यात्रा

गांधीजी ने दक्षिण में हरिजनों के प्रति विशेष अलगाव का भाव होने से यात्राएँ प्रारम्भ कीं। मछलीपट्टम की सड़कों पर हरिजनों को आज़ादी से चलन की मनाही सरकार द्वारा नहीं, उच्चवर्णियों द्वारा की गई थी। गांधीजी उनकी दयनीय दशा पर बड़े दुखी थे। वे सभा में अपनी व्यथा को शब्दों में उड़लते हुए बोले– 'यदि हमने अपने समाज से अस्पृश्यता (छुआछूत) समाप्त न की तो हम अपनी कब्र स्वयं खोदेंगे।' भाषण की समाप्ति पर उन्होंने तीन मंदिरों को हरिजनों के लिए खुलवा दिया। दक्षिण में हरिजनों को मंदिर में जाकर मूर्ति के दर्शन की सुविधा तो थी ही नहीं, वे मंदिर को जाने वाली सड़कों पर भी चल नहीं पाते थे। कहीं–कहीं उन्हें डण्डा पीटकर अपने अशुभागमन की सूचना देनी पड़ती थी, जिससे ऊँची जाति वाले लोग उनकी छाया से दूर रह सकें। मद्रास ही नहीं भारत के अन्य प्रदेशों में भी उनके साथ समानता का व्यवहार नहीं किया जाता था। गांधी मानव समानता में विश्वास रखते थे, इसलिए वे जाति–प्रथा के बहुत विरोधी थे और छुआछूत का हिन्दू समाज का कलंक मानते थे। गांधीजी की हरिजनोद्धार यात्रा का परिणाम यह हुआ कि देश भर के कई मंदिर उनके लिए खुल गए और उनके प्रति अलगाव के भाव भी कम हो गए।

नए सुधार और कांग्रेस का सहयोग

गांधीजी ने खिलाफ़त आन्दोलन में सहयोग देकर हिन्दू और मुसलमानों को नज़दीक लाने का जो प्रयत्न किया था, वह असफल हो गया। मिस्टर जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग के आधार पर मुस्लिम–बहुल प्रान्तों के एक पृथक राष्ट्र की माँग पेश कर दी और अपने प्रस्तावित राष्ट्र का नाम पाकिस्तान रखा। धर्म के आधार पर राष्ट्रों के निर्माण का विचार गांधीजी को अटपटा लगा। उनका मत था कि भिन्न धर्मों का अर्थ भिन्न राष्ट्रीयता या संस्कृति नहीं होता परन्तु मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान बनाए जाने के सम्बन्ध में आन्दोलन जारी रखा।

द्वितीय महायुद्ध और भारत

1 सितम्बर, 1939 को जर्मनी के तानाशाह हिटलर ने पोलैंड पर एकाएक हमला कर द्वितीय महायुद्ध का बिगुल बजा दिया। इटली का तानाशाह मुसोलिनी उसके साथ हो गया। हिटलर ने ज्यों ही पोलैंड के शहरों पर बम–

वर्षा प्रारम्भ की त्यों ही इंग्लैंड और फ्रांस ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

भारत के वाइसराय ने रेडियो पर कहा– 'वी आर एट वार विथ जर्मनी (हम जर्मनी से युद्ध कर रहे हैं) भारत को युद्ध–कार्य में सहायता देने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।' कांग्रेस को वाइसराय की घोषणा में 'हम' शब्द के प्रयोग से आपत्ति थी। युद्ध में उतरने से पहले ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों से कब सलाह ली थी? कांग्रेस ने अंग्रेज़ सरकार को तभी सहायता देने की इच्छा प्रकट की, जब वह भारत को स्वतंत्र कर दे। सरकार कांग्रेस की शर्त मानने के लिए तैयार नहीं थी, अत: कांग्रेस ने सरकार को युद्ध में सहायता देने से इन्कार कर दिया और अपने सभी प्रान्तों के मंत्रीमण्डलों से त्यागपत्र दिलवा दिया। अब मुस्लिम लीग सरकार की विशेष कृपापात्र बन गई।

गांधीजी अंग्रेज़ों को संकट में फँसा देखकर उनके आगे कोई शर्त नहीं रखना चाहते थे। युद्ध–काल में वे स्वतंत्रता की माँग पेश करने में एक प्रकार की हिंसा देखते थे। कांग्रेस के बहुत से नेता उनकी अहिंसा की इतनी सूक्ष्म व्याख्या को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे।

उस समय चर्चिल ब्रिटिश सरकार में प्रधानमंत्री थे। वे गांधीजी और भारत के स्वाधीनता–आन्दोलन के घोर विरोधी थे।

यद्यपि गांधीजी युद्ध के समय सत्याग्रह के समान किसी आन्दोलन को प्रारम्भ करने के पक्ष में नहीं थे, परन्तु स्वाधीनता के लिए छटपटाने वाली जनता के मत को ठुकराना भी उनके लिए कठिन था। अत: उन्होंने छोटे पैमाने पर व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने जन–समूह को नहीं, अपने द्वारा चुने हुए कांग्रेस–नेताओं को ही सत्याग्रह करने का आदेश दिया। आचार्य बिनोवा भावे प्रथम और पंडित जवाहरलाल नेहरू दूसरे सत्याग्रही थे। उस समय सभाई नारा था– 'नहीं भाई, नहीं पाई'। इसका अर्थ यह था कि कोई भी भारतीय पलटन में भर्ती नहीं होगा और युद्ध के कार्यों में एक पाई की भी सहायता नहीं देगा। देश में लगभग चौबीस हज़ार कांग्रेस नेता युद्धविरोधी भाषण देने के अपराध में जेल में बन्द कर दिए गए। पर जापान के आक्रमण के भय से सन् 1941 में उन्हें छोड़ दिया गया।

सन् 1941 के अंत में युद्ध ने भीषण रूप धारण कर लिया। जापान भी उसमें कूद पड़ा और तेजी के साथ दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों को हराता हुआ आगे बढ़ आ रहा था। यह भय होने लगा कि वह कहीं हिन्दुस्तान पर आक्रमण कर उसे भी न निगल जाए। अमेरिका और रूस भी मित्र–राष्ट्र अंग्रेज़ और फ्रांस के साथ होकर जर्मनी और जापान से लड़ने लगे।

अमेरिका की सहानुभूति भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के प्रति प्रारम्भ से रही थी। युद्धकालीन अमरीकी प्रेसीडेंट रूजवेल्ट ने चर्चिल से आग्रह किया कि वे भारतीयों को स्वाधीन कर दें। इंग्लैंड का जनमत भी भारत के पक्ष में था। लाचार होकर चर्चिल ने सर स्टफ़र्ड क्रिप्स को भारतीय नेताओं से भावी सुधारों के सम्बन्ध में चर्चा करने के लिए भेजा। क्रिप्स औपनिवेशिक स्वराज्य का प्रस्ताव लेकर आए। उन्होंने नेताओं से स्पष्ट कहा कि युद्ध के पश्चात् ही औपनिवेशिक स्वराज्य का जो मसौदा वे लाए थे, उसमें प्रान्तों के पृथक हो सकने की स्वतंत्रता थी। इस प्रकार

के स्वराज्य से देश के कई टुकड़े हो जाने की सम्भावना थी। गांधीजी को क्रिप्स का प्रस्ताव मान्य नहीं हुआ। कांग्रेस ने भी उसे ठुकरा दिया। चर्चिल पर रूजवेल्ट का बहुत अधिक दबाव होने के कारण उसने अपने मंत्री क्रिप्स को स्वाधीनता का निकम्मा प्रस्ताव लेकर भेजा था। वह जानता था कि भारतीय नेता उसे ठुकरा देंगे।

जापान की आक्रामक गति तेजी पकड़ती जा रही थी। वह बर्मा (म्यांमार) की ओर बढ़ रहा था। गांधीजी चाहते थे कि यदि भारत स्वाधीन हो जाता है तो वह शत्रु का खुलकर मुकाबला करेगा। अत: उन्होंने पुन: सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ करने का निश्चय किया।

भारत छोड़ो आन्दोलन और गांधीजी

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने अपनी सात-आठ अगस्त, 1942 की बंबई (मुंबई) में होने वाली बैठक में स्वाधीनता प्राप्ति के लिए सत्याग्रह-आन्दोलन प्रारम्भ करने का प्रस्ताव पास कर दिया। गांधीजी ने भावपूर्ण भाषा में कांग्रेस प्रतिनिधियों से कहा कि अब करने या मरने का समय आ गया है। हमें अंग्रेजों से भारत छोड़ने के लिए कहना पड़ रहा है। वर्तमान स्थिति में यही एक विकल्प रह गया है। गांधीजी आन्दोलन प्रारम्भ करने के पूर्व वाइसराय को विस्तार के साथ उनके सम्बन्ध में पत्र लिखना चाहते थे, परन्तु सरकार ने उन्हें तथा उनके साथियों को 9 अगस्त को प्रात: ही पकड़ कर यरवदा जेल भेज दिया। फिर वे आगा ख़ाँ महल में रखे गए। उनकी गिरफ्तारी के बाद ही देश भर में धर-पकड़ शुरू हो गई। नेताओं के जेल में बन्द हो जाने के कारण सत्याग्रह का अहिंसात्मक रूप समाप्त हो गया। देश भर में हिंसा के कार्य होने लगे। रेल की पटरियाँ उखाड़ी जाने लगीं। टेलीफोन के तार काटे जाने लगे और सरकारी खजाने लूटे जाने लगे तथा सरकारी कर्मचारियों, विशेष कर पुलिस कर्मचारियों पर घातक आक्रामण होने लगे। इसी प्रकार के अराजक और हिंसक कार्य छिपकर और खुलकर होने लगे। देश के कई स्थानों में ऐसी परिस्थिति पैदा हो गई मानो अंग्रेज़ी राज्य समाप्त हो गया हो।

गांधीजी का हिंसा के कार्यों से सदा विरोध रहा, परन्तु अंग्रेज़ सरकार इन कार्यों के लिए बराबर गांधीजी को ही जिम्मेदार ठहराती रही। चर्चिल किसी प्रकार गांधीजी को जापानियों से साँठ-गाँठ होने के अभियोग में फाँसकर भयंकर दण्ड देना चाहता था, परन्तु उसे छानबीन कराने पर भी उनके विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं मिला। गांधीजी ने वाइसराय को लिखे लम्बे पत्रों में देश में होने वाले हिंसा के कार्यों के लिए अपने को कतई जिम्मेदार नहीं माना। उन्होंने इसकी जिम्मेदारी सरकार पर ही डाली। उन्होंने लिखा कि आन्दोलन के संचालित करने के पूर्व ही जब मुझे पकड़ लिया गया तब मैं देश में होने वाली हिंसा की घटनाओं के लिए कैसे जिम्मेदार हो सकता हूँ? फिर आत्मशुद्धि की दृष्टि से गांधीजी ने उपवास प्रारम्भ कर दिया, जिससे जनता हिंसा के कार्यों को रोक दे। वाइसराय लार्ड लिनलिथगो गांधीजी को छोड़ना चाहते थे, क्योंकि उनकी हालत उपवास के कारण बहुत खराब होती जा रही थी। उपवास की अवधि में कई क्षण ऐसे आए, जब उनकी मृत्यु होने में डॉक्टरों को भी सन्देह नहीं रहा परन्तु उन्होंने अपने आत्मबल से संकट के क्षण टाल दिए और उपवास समाप्त हुआ। धीरे-धीरे वे स्वस्थ हो गए। एक दिन अचानक उनके निजी सचिव महादेव भाई देसाई की मृत्यु हो गई। आग़ा खाँ महल में, जहाँ नेता बन्दी थे, शोक छा

गया। गांधीजी प्रतिदिन प्रातः देसाई के दाह-संस्कार के स्थान पर जाते, फूल चढ़ाते और गीता का पाठ करते थे। वहाँ एक पत्थर गाड़ा गया, जिस पर मीरा बेन ने ओम के साथ-साथ मुस्लिम और देसाई चिह्न भी अंकित किए।

महादेव भाई के स्वर्गवास के बाद आग़ा ख़ाँ महल को एक और मृत्यु का अभिशाप झेलना पड़ा। वह था कस्तूरबा की मृत्यु। 22 फरवरी, 1944 को कस्तूरबा ने गांधीजी की गोद में अन्तिम साँस ली। उन्होंने मृत्यु के कुछ क्षण पूर्व यह इच्छा प्रकट की थी कि मेरा दाह-कर्म गांधीजी द्वारा तैयार की गई खादी की साड़ी के साथ किया जाए। महादेव भाई की दाह-भूमि के पास ही 'बा' का दाह संस्कार वैदिक मंत्रों की ध्वनियों के साथ सम्पन्न हुआ।

महादेव भाई और कस्तूरबा की मृत्यु के पश्चात् गांधीजी अपने को एकाकी अनुभव करने लगे और थोड़े ही समय में दो बार मलेरिया और पेट की बीमारी से जब बहुत अधिक दुर्बल हो गए, तो सरकार ने उनकी मृत्यु की आशंका से उन्हें 6 मई, 1944 को जेल से छोड़ दिया। उनके साथ ही अन्य प्रमुख नेता भी छोड़ दिए गए।

जेल से छूटने के बाद गांधीजी ने बंबई (मुंबई) के जुहू नामक स्थान में थोड़ा विश्राम किया, परन्तु जनता-जनार्दन की सेवा के बिना उन्हें आन्तरिक विश्राम नहीं मिलता था। सन् 1943 में बंगाल में भीषण अकाल पड़ा था। अनुमान है कि पन्द्रह लाख से अधिक लोगों ने भूख-भूख चिल्लाकर अपने प्राण दिए थे। बंगाल के शहरों के गोदामों में सैकड़ों मन अनाज भरा पड़ा था, पर वह सरकार की निर्दय नीति के कारण लोगों के मुँह में नहीं जा पाता था। उस समय गांधीजी जेल में थे। बंगाल की पीड़ित जनता की करुण गाथाएँ सुन-सुनकर वे व्याकुल हो उठते थे। जेल से उन्होंने वाइसराय को अकाल-पीड़ितों की सहायता के लिए कई बार पत्र लिखे, परन्तु उनका कोई परिणाम नहीं निकला।

बंगाल की यात्रा

स्वास्थ्य जब ज़रा संभल गया, तो उन्होंने पुनः तत्कालीन वाइसराय लार्ड वेवेल को पत्र लिखकर बंगाल जाने की अनुमति चाही। लार्ड वेवेल फ़ौजी आदमी था। उसके मन में गांधीजी के प्रति आदर का भाव नहीं था। वह सोचने लगा, गांधीजी जनता की सेवा के बहाने लोगों को भड़काने और कांग्रेस का प्रचार करने जा रहे हैं। बंगाल के गवर्नर का नाम था कैसी। उसके मन में गांधीजी के प्रति आदर का भाव था, परन्तु वह वाइसराय की इच्छा के प्रतिकूल स्वयं कोई निर्णय नहीं ले सकता था, क्योंकि वेवेल ने गांधीजी के पत्र के उत्तर में उन्हें बंगाल जाने की मनाही कर दी थी।

सन् 1945 में द्वितीय महायुद्ध समाप्त हो गया। इंग्लैंड में चुनाव हुए। भारत का विरोधी चर्चिल चुनाव में हार गया और उसके स्थान पर मजदूर दल के शांतिप्रिय नेता लार्ड एटली की सरकार बनी।

अब गांधीजी को बंगाल जाने की अनुमति प्राप्त हो गई। जब वे कोलकाता पहुँचे, तो उन्होंने गवर्नर कैसी से भेंट की। वह गांधी की सत्यवादिता और देशभक्ति पर मुग्ध था। उसने उन्हें बंगाल में उनकी इच्छा के अनुसार कहीं भी जाने की स्वतंत्रता दे दी।

गांधीजी ने बंगाल की यात्रा से अनुभव किया कि प्रान्त में भ्रष्टाचार, कालाबाज़ारी और मुनाफ़ाखोरी का

बोलबाला है। गांधीजी बंगाल के कई गाँवों में गए और जनता की कष्ट-गाथाएँ सुनकर उन्हें दूर करने का आश्वासन देते रहे, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि गवर्नर भला आदमी है। यदि उसका ध्यान किन्हीं खास बातों की ओर आकर्षित किया जाएगा तो अवश्य उन पर कार्रवाई करेगा। गांधीजी छह सप्ताह बंगाल में रहे और जो कुछ उनसे जनता की सहायता के लिए हो सका, उन्होंने किया।

बंगाल से गांधी मद्रास गए और वहाँ उन्होंने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता की। गांधीजी ने जब हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया, तब उन्हें दक्षिण भारत से उसके प्रचार की आवश्यकता अनुभव हुई। उन्होंने उत्तर भारत के कुछ उत्साही हिन्दी प्रेमियों के साथ अपने पुत्र देवदास गांधी को मद्रास भेजकर दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार-सभा की स्थापना की थी। इस सभा ने दक्षिण में हिन्दी का प्रचार कार्य अपने हाथ में लिया था और लाखों स्त्री-पुरुषों को हिन्दी सिखाई थी और आज भी सिखा रही है। गांधीजी के स्वभाव की यह विशेषता रही है कि वे सभाओं में अपने विचार प्रकट कर चुप नहीं रह जाते थे, उन्हें कार्यरूप में परिणित करने के लिए जी-जान से जुट जाते थे।

इस बीच एटली की सरकार ने भारत को स्वाधीन करने का निश्चय कर लिया और इसके लिए उसने मंत्रीपरिषद् के तीन प्रतिनिधि भारत भेजे। उनमें सर क्रिप्स, पैथिक लॉरेंस और एलेक्ज़ेंडर थे। सर क्रिप्स पहले भी चर्चिल के कार्यकाल में औपनिवेशिका स्वराज्य का मसौदा लेकर आए थे और गांधीजी से मिले थे। द्वितीय महायुद्ध मित्र-राष्ट्रों के लिए उस समय संकट पैदा कर रहा था। उस समय गांधीजी ने क्रिप्स से विनोद में कहा था, 'स्वराज्य का मसौदा तो डूबते बैंक के नाम अग्रिम तारीख के चेक समान (अर्थात् निरर्थक है)।'

इस बार क्रिप्स मिशन ठोस प्रस्ताव लेकर जिस समय दिल्ली पहुँचा, उस समय गांधीजी पूना के निकट प्राकृतिक स्वास्थ्य सदन, उरूलीकांचन में विश्राम कर रहे थे। सर क्रिप्स उनसे शीघ्र ही मिलना चाहते थे। उन्होंने सुधीर घोष को, जो उनके और गांधीजी दोनों के विश्वासपात्र थे, उरूलीकांचन भेजा। गांधीजी ने बहुत तर्क-वितर्क के पश्चात् सर क्रिप्स से मिलने का निश्चय किया।

उरूलीकांचन से गांधी अपने 13 साथियों के साथ तीसरे दर्जे के एक डिब्बे की स्पेशल ट्रेन से दिल्ली रवाना हुए। स्पेशल ट्रेन का प्रबन्ध सरकार ने ही किया था। गाड़ी प्रायः हर स्टेशन पर ठहरा ली जाती थी, क्योंकि जनता को ज्ञात हो गया था कि गांधीजी स्पेशल ट्रेन से दिल्ली जा रहे हैं। वह उनके दर्शनों के लिए बहुत बड़ी संख्या में स्टेशनों पर पहुँचती थी और स्टेशन मास्टर को गाड़ी ठहराने को मजबूर करती थी। गांधीजी भी जनता की इच्छा का ध्यान रखते थे। इसलिए दिल्ली समय पर नहीं पहुँच पाए। उनकी ट्रेन स्पेशल भी क्या थी? एक तीसरे दर्जे का डिब्बा और एंजिन - बस चाल भी उसकी तेज़ नहीं थी। गांधीजी सदा की भाँति भंगी बस्ती में ठहरे।

पैथिक लॉरेंस ने, जो मिशन के दूसरे सदस्य थे, संदेश भेजा कि मैं सात बजे संध्या को आपसे मिलने आ रहा हूँ। गांधीजी ने शिष्टतावश स्वयं ही वाइसराय की कोठी पर उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की।

इसी बीच गांधीजी को स्मरण हुआ- 'अरे, रेल का किराया तो हमने चुकाया ही नहीं।' उन्होंने सुधीर घोष

को तुरन्त बुलाकर कहा, 'जोड़ो तो तीसरे दर्जे का तेरह आदमियों का कितना किराया होता है?' सुधीर ने जोड़कर कहा– 'बापू तीन सौ पचपन रुपये और छह आने होते हैं।'

तो लो, वाइसराय के सेक्रेटरी को यह किराया दे आओ। सुधीर गए और वाइसराय के सेक्रेटरी के सामने किराया रखकर कहा कि यह स्पेशल ट्रेन का किराया गांधीजी ने भेजा है। सेक्रेटरी ने मुस्कराते हुए कहा, 'क्या मैं स्टेशन मास्टर हूँ, जो किराया लूँ? अरे, इसकी जरूरत क्या है? सरकार ने ही तो उन्हें बुलाया है, नहीं–नहीं किराया वगैरह कुछ नहीं। सुधीर ने कहा– 'साहब बुढ़े बापू नहीं मानेंगे। बड़े जिद्दी हैं।' सेक्रेटरी ने रेलवे बोर्ड से उसी समय पूछकर कहा स्पेशल ट्रेन का किराया अठारह हजार रुपया है। अपने बापू से कहो कि चुकाएँ।'

सुधीर असमंजस में पड़ गए। गांधीजी के पास गए और उन्हें सेक्रेटरी के माँग के संबंध में विस्तार के साथ अवगत कराया। गांधीजी ने कहा सेक्रेटरी से जाकर कहिए कि उनका हिसाब गलत है। सामान्य तौर पर मैं तीसरे दर्जे में यात्रा करता हूँ, इसलिए मैं तीसरे दर्जे का किराया दूँगा। वाइसराय के सेक्रेटरी को गांधीजी के तर्क के आगे झुकना पड़ा और तीसरे दर्जे का किराया लेकर संतोष करना पड़ा। गांधीजी यह मानते थे कि मैं जनता के द्रव्य पर जी रहा हूँ इसलिए मुझे सँभालकर उसे खर्च करना चाहिए।

दिल्ली में रहकर गांधीजी और सर क्रिप्स तथा पैथिक लारेंस में बीच–बीच में परामर्श होता रहता था। मिशन ने दिल्ली में देश के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बुलाकर यह जानना चाहा कि किस प्रकार के संविधान से सभी लोग संतुष्ट हो सकेंगे। मिशन दो उद्देश्यों को लेकर आया था। एक तो था संविधान के रूप का निर्णय और दूसरा सत्ता सौंपने के पूर्व एक अंतरिम केन्द्रीय सरकार की स्थापना का प्रयत्न।

मिशन में इन्हीं दो बातों के संबंध में शिमला में मुस्लिम लीग और कांग्रेस के प्रतिनिधियों से विचार–विनिमय के लिए सभा आमंत्रित की थी। गांधीजी को दिल्ली में आभास हो गया था कि उनकी स्वराज्य की कल्पना के अनुरूप कार्य नहीं हो रहा है, इसलिए वे शिमला नहीं जाना चाहते थे। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि गांधीजी कांग्रेस के साधारण सदस्य भी नहीं थे। फिर भी वे उसके सर्वस्व थे, पर वे प्रजातंत्र में विश्वास करते थे। इसलिए अपने सहयोगियों को स्वतंत्रता देते थे। उन्होंने दिल्ली और शिमला में होने वाली कमेटियों की बैठकों में भाग नहीं लिया। क्रिप्स के बहुत आग्रह करने पर वे शिमला गए, क्रिप्स और उनके साथी गांधीजी से मिलते थे। गांधीजी को उनकी और भारतीय नेताओं की चर्चा से संतोष नहीं हुआ। वे दिल्ली लौट आए और अपने उन स्वाधीनता–सेनानियों को जेल से मुक्त कराने का प्रयत्न करने लगे, जो वर्षों से बिना मुकदमा चलाए अनिश्चित काल के लिए जेल में ठूँस दिए गए थे।

गांधीजी ने सर क्रिप्स और पैथिक लारेंस से आग्रह किया कि आप राजनीतिक बंदियों की रिहाई के साथ गरीबों पर लगने वाले नमक कर में भी छूट दिला दें। सर क्रिप्स ने वाइसराय द्वारा गांधीजी का पहला काम तो पूरा कर दिया– राजनीतिक बंदी छोड़ दिए गए, परंतु नमक–कर की छूट नहीं करा सके। संभवत: उन्होंने इसे अधिक महत्व की बात नहीं समझी।

क्रिप्स मिशन के इंग्लैंड लौट जाने पर गांधीजी ने वाइसराय से बार-बार नमक कर हटा देने का आग्रह किया, पर वह राजी नहीं हुआ। इस कर को गांधीजी ने केन्द्र में अस्थाई सरकार बनने पर रद्द करवा दिया।

क्रिप्स-मिशन जब तक भारत में रहा, गांधीजी से सम्पर्क बनाए रहा। गांधीजी किसी भी रूप में देश का विभाजन नहीं चाहते थे परंतु मुस्लिम लीग विभाजन पर तुली हुई थी। गांधीजी ने लीग के सर्वेसर्वा जिन्ना से कई बार भेंट की और उनसे एक बार तो यह भी कहा कि तुम चाहो तो मेरे शरीर के दो टुकड़े कर डालो, परंतु देश के दो टुकड़े मत करो परंतु गांधीजी की भावना का जिन्ना पर कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने पाकिस्तान प्राप्त करने के लिए सीधी कार्यवाही की धमकी ही नहीं दी, उसके अनुसार लीग के अनुयायियों ने कार्य भी प्रारंभ कर दिया। वाइसराय ने नेताओं के समझौते के बाद केन्द्र में अंतरिम सरकार स्थापित कर दी थी। मुस्लिम बहुल प्रांतों में लीगी मंत्रिमंडल और शेष प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल स्थापित हो चुके थे।

लीग की सीधी कार्यवाही के प्रस्ताव का यह परिणाम हुआ कि कोलकाता (कलकत्ता) और पूर्व बंगाल में भयंकर साम्प्रदायिक दंगे हुए। बाद में बिहार में जवाबी सांप्रदायिक दंगों से धन-जन की बड़ी हानि हुई। कोलकाता (कलकत्ता) और पूर्व बंगाल में हत्याकांडों को गर्वनर नहीं रोक सका। गांधीजी को कोलकाता (कलकत्ता) और पूर्व बंगाल से निरपराध स्त्री-की हत्या, लूट अग्निकांड आदि के जब समाचार मिले, तो वे अपने को रोक नहीं सके। केंद्रीय सरकार की अनिच्छा की परवाह न कर वे कलकत्ता (कोलकाता) गए और वहाँ हिंदू और मुसलमानों को शांति और प्रेम का उपदेश दिया। फिर बंगाल के नोआखाली और अन्य स्थानों में गए, जहाँ अमानुषिक अत्याचारों से अल्पसंख्यक जनता बर्बाद हो चुकी थी और भय से आकुल हो रही थी। उन्होंने कई गाँव का दौरा किया। उनके साथ उनकी नातिन और दो व्यक्ति और भी थे। वे पैदल यात्रा करते थे। कभी-कभी नंगे पैर चलते थे। प्रत्येक गाँव में एक-दो रोज ठहरते और हिंदू-मुसलमान को प्रेम से रहने का उपदेश देते थे। उन्होंने पूर्व बंगाल से लौटकर बिहार के दंगा पीड़ितों को राहत पहुँचाने का काम किया।

एकला चलो रे

पूर्वी बंगाल के गाँवों में गांधीजी हिंदू-मुसलमानों को प्रेम और भाईचारे की जिंदगी बिताने का जो उपदेश दे रहे थे, उसे प्रांतीय सरकार पसंद नहीं कर रही थीं, क्योंकि उसकी सद्भावना-यात्रा से उसकी विफलता की ओर संसार का ध्यान खिंचता था। केन्द्र से भी उन्हें सहायता नहीं मिल रही थी। वह भयंकर तूफान में अकेले खड़े थे, केवल दृढ़ निश्चय उनके साथ था, रवीन्द्र की आवाज उनके कानों में गूंज रही थी-

चित्र 11. स्वराज्य की रात

'यदि तुम्हारी पुकार कोई नहीं सुनता है तो क्या चिंता है तुम अपने गंतव्य की ओर बढ़े चलो, बढ़े चलो, घबराओ मत। अरे एकला चलो रे, एकला चलो।

'ब्रिटिश सरकार के प्रधानमंत्री लार्ड एटली भारत को स्वाधीन करने का विचार कर चुके थे। अतः उन्होंने पार्लियामेंट में घोषित कर दिया कि अंग्रेज जून 1948 में भारत छोड़ देंगे। इसके बाद उन्होंने भारत के तत्कालीन वाइसराय बनाकर भेज दिया। लार्ड वेवेल को इंग्लैंड वापस बुला लिया और उनके स्थान पर लार्ड माउंटबेटन को भारत का वाइसराय बनाकर भेज दिया। लार्ड माउंटबेटन चतुर राजनीतिज्ञ, मधुरभाषी और गांधीजी के प्रति सम्मान रखने वाला व्यक्ति था। उसके आते ही मुस्लिम लीग के नेता जिन्ना और कांग्रेसजनों से बातचीत शुरू कर दी जिन्ना पाकिस्तान की बात पर दृढ़ रहे। कांग्रेस ने देश को पराधीन से मुक्त करने की दृष्टि से विभाजन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। परिस्थितियों का चक्र कुछ ऐसा चला कि अंग्रेजों को भारत छोड़ने की निश्चित तिथि से एक वर्ष पूर्व 15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्र कर देश छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा। गांधीजी कांग्रेस–नेताओं के मत से सहमत नहीं थे, क्योंकि वे देश के विभाजन से हिंदू और मुसलमान दोनों की भलाई नहीं देखते थे परंतु अब देश का विभाजन अनिवार्य हो गया, तब दुखी मन से इसे नियति का विधान मान वे मौन हो गए।

उत्तर–पश्चिम प्रांत, सिंधु बलूचिस्तान और पंजाब का पश्चिमी भाग तथा बंगाल का पूर्वी भाग काटकर पाकिस्तान बन गया और शेष भाग भारत के नाम से घोषित हो गया। गांधीजी का हृदय देश के दो टुकड़े हो जाने पर भीतर ही भीतर रो रहा था। जब दिल्ली में 14 अगस्त की संध्या को जनता 15 अगस्त 1947 के स्वातंत्र्य सूर्य के उदय की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी, तब महात्मा गांधी कोलकाता की हिंदू–मुसलमान भाइयों के रक्त से रंगी हुई सड़कों तथा गलियों के पास एक मुसलमान के मकान में चरखा चलाकर सूत कात रहे थे और दोनों जातियों के लोगों को प्रेम से रहने का उपदेश दे रहे थे।

स्वराज्य की रात

14 अगस्त 1947 की आधी रात, ठीक बारह बजे घंटे बज रहे थे, शंख–ध्वनि हो रही थी। संसद–सदन के केंद्रीय कक्ष में बाबू राजेन्द्र प्रसाद के सभापतित्व में संविधान–सभा की एक विशेष बैठक ब्रिटिश शासन सत्ता ग्रहण करने का समारोह मनाने को हो रही थी। जनता में हर्ष–उमंग की हिलोरें उठ रही थीं। सभा भवन दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था। प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने सत्ता स्वीकारते हुए महत्वपूर्ण भाषण दिया था। रह–रहकर करतल–ध्वनि से 'हाल' गूँज उठता था। पर पर संसद में बैठे हुए स्त्री–पुरुषों की आँखें महात्मा के दर्शन के लिए आकुल हो रही थीं, जिसके त्याग और तपस्या के बल से भारत स्वाधीन हो रहा था। वहाँ वह नहीं था। वह था कोलकाता के एक मुस्लिम परिवार के घर में जिसके बाहर की गलियाँ और सड़कें हिंदू–मुसलमान भाइयों के रक्त से रंगी हुई थी। वह दोनों भाइयों को प्रेम का संदेश देने गया था। वह भारत की अखण्डता का पुजारी खंडित भारत के स्वराज्य–समारोह का दृश्य नहीं देखना चाहता था, नहीं देख सकता था। जब अंग्रेज पत्रकारों ने उनसे संदेश माँगा तो उन्होंने सिर्फ इतना कहा– मुझे कुछ नहीं कहना।

जिन क्षणों में सारा देश स्वतंत्रता का उत्सव मना रहा था, उन क्षणों में भारत का निर्माता, मानवता का अनन्य पुजारी,दीन-हीनों का संरक्षक, शांति और प्रेम का देवता नोआखाली के रक्त-रंजित, धूलिमय मार्गों और पगडंडियों पर हिंदुओं और मुसलमानों को पारस्परिक प्रेम और सहानुभूति का पावन संदेश देता हुआ घूम रहा था।

स्वराज्य का प्रभात

भारत और पाकिस्तान में स्वतंत्रता के कागजों पर दोनों राष्ट्रों के नेताओं के हस्ताक्षरों की स्याही सूख भी नहीं पाई थी कि दोनों राष्ट्रों के शहरों और ग्रामों की सड़के तथा बस्तियाँ भाई-भाई के रक्त से गीली होने लगी। ऐसी स्थिति देखकर महात्माजी ने बड़े दुख के साथ कहा था, 'मैं भाई-भाई के आपस में कट मरने का दृश्य देखने को जिंदा नहीं रहना चाहता।' उन्होंने पाकिस्तान के पश्चिमी पंजाब में भी जाना चाहा था परंतु दिल्ली में ही नर-संहार, लूट आदि के भयानक कांड हो रहे थे। इसलिए वहाँ भी गांधीजी की आवश्कता थी। वे वहीं बिड़ला भवन में ठहर गए और प्रतिदिन संध्या को प्रार्थना-सभा में अहिंसा, प्रेम और एकता आदि पर प्रवचन करने लगे। जनता की हिंसक प्रवृत्ति को शांत करने के लिए उन्होंने 13 जनवरी 1948 को उपवास भी प्रारंभ कर दिया और यह घोषित किया कि जब तक हिंदू, मुसलमान, सिख आदि जातियाँ लड़ना बंद नहीं करेंगी, मेरा उपवास जारी रहेगा। इसका परिणाम यह हुआ कि पाँच दिन के भीतर ही सब संप्रदायों के नेताओं ने उन्हें विश्वास दिलाया कि 'हम शांति से रहेंगे, प्रेम से रहेंगे।' अतः उन्होंने उपवास त्याग दिया और नित्य की भाँति प्रार्थना-सभा में प्रवचन जारी रखा।

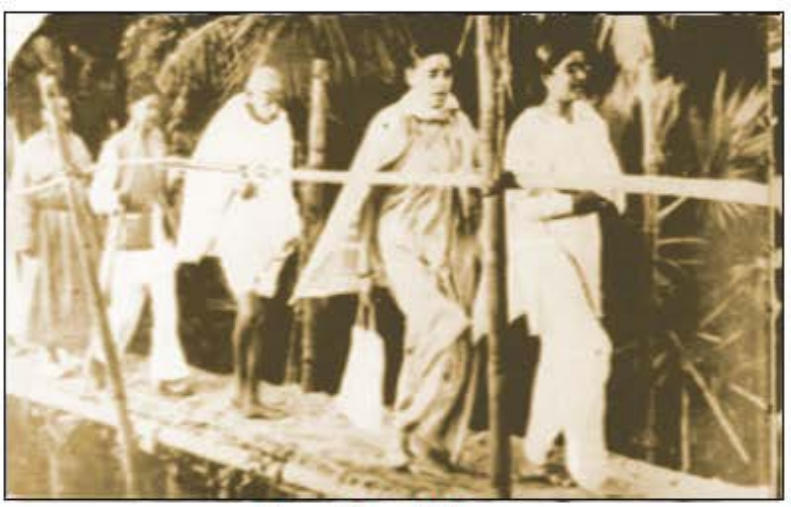

चित्र 12. नोआखाली में बापू

महाप्रयाण

1948 की जनवरी की 30 तारीख थी। शुक्रवार का दिन था। संध्या रात की ओर बढ़ रही थी। घड़ी ने पाँच बजा दिए थे। बिड़ला हाउस के प्रांगण में जनता की भीड़ महत्मा गांधी के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी। उनका प्रार्थना-सभा में आगमन का समय हो रहा था।

'बापू को आज क्या हो गया? वे तो कभी लेट नहीं होते थे'- लोग आपस में फुसफुसा रहे थे। 'जरा अपनी घड़ी तो देखो, कहीं वही तो गड़बड़ नहीं है'-कुछ लोग सावधान होकर बोल रहे थे।

पाँच बजकर बारह मिनिट हुए। लोगों ने देखा-महात्माजी लान में दो लड़कियों आभा और मनु के कंधों पर

हाथ रखे जल्दी-जल्दी चले आ रहे थे। कंधे पर खादी का शाल ओढ़े हुए थे। दिल्ली में काँपने वाली सर्दी जो बरस रही थी। वे बहुत अशक्त दिखाई दे रहे थे। वे प्रार्थनासभा के स्थान पर आए। जनता उनके निकट जल्दी-जल्दी बढ़ने लगी। वे हाथ जोड़े मंच पर मुश्किल से पाँच ही सीढ़ी चढ़े होंगे कि एक आदमी भीड़ में से लपका और उसने चरण छूने की मुद्रा में झुककर छाती पर पिस्तौल

चित्र 15. प्रार्थना-सभा में जाते हुए

तान दी और लगातार तीन फायर किए। महात्मा जी के मुख से केवल 'हे राम' निकला और वे बेहोश होकर धरती पर गिर गए। जनता में खलबली मच गई, हत्यारा पकड़ लिया गया। जनता उस पर बुरी तरह टूट रही थी, पर पुलिस उसे खींचकर शीघ्र ही मैदान से बाहर ले गई। गांधीजी को बिड़ला हाउस में ले जाया गया। बिड़ला हाउस को जनता की असंख्य भीड़ ने घेर लिया। नेता गांधीजी के शव के पास शोक-मुद्रा में बैठे रहे 'रघुपति राघव राजा राम' की धुन गूँजती रही।

आकाशवाणी ने उनकी हत्या का समाचार संसार भर में प्रसारित कर दिया। पं. जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्र के नाम रुँधी हुई आवाज में संदेश देते हुए कहा-

'हमारे जीवन की रोशनी बुझ गई। चारों तरफ अंधेरा छा गया है।' फिर जरा सँभलकर बोले- 'मैंने अभी कहा कि रोशनी बुझ गई है, यह ठीक नहीं है। जिस रोशनी से देश जगमगा रहा था, वह मामूली रोशनी नहीं थी। वह कभी नहीं, कभी नहीं बुझ सकती।'

दिल्ली में यमुना नदी के किनारे महात्माजी का पार्थिव शरीर पंच तत्व में विलीन हो गया, परंतु वे अपने यश-रूपी शरीर से युग-युग तक जीवित रहेंगे और संसार को अपने ज्ञान-प्रकाश से ज्योतित करते रहेंगे।

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्माऽमृतं गमय

अभ्यास

1. गोखले जी ने गांधीजी को देश-भ्रमण की सलाह क्यों दी?
2. सत्याग्रह-आश्रमवासियों को किन नियमों का पालन करना पड़ता था?
3. सत्याग्रह-आश्रम में हरिजन परिवार के आ जाने पर गांधीजी के सामने कौन-सी समस्याएँ आईं?
4. महात्मा गांधीजी का बनारस (वाराणसी) विश्वविद्यालय में दिया गया भाषण क्रांतिकारी क्यों कहा गया है?
5. गांधीजी ने असहयोग-आंदोलन क्यों चलाया? उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कौन-से तरीके अपनाए गए?
6. बारडोली सत्याग्रह क्या था? इनका क्या परिणाम निकला?
7. नमक-कर तोड़ने के लिए गांधीजी ने क्या किया?
8. गांधीजी बुनियादी शिक्षा के प्रतिपक्षी क्यों थे?
9. गांधीजी की आदर्श ग्राम की कल्पना क्या थी?
10. किन परिस्थितियों के कारण गांधीजी को 'भारत छोड़ो आंदोलन' प्रारंभ करना पड़ा? उसका परिणाम क्या हुआ?
11. गांधीजी ने देश-भ्रमण करते हुए क्या-क्या अनुभव किए?
12. संक्षिप्त टिप्पणी लिखो-

    साबरमती आश्रम, जलियाँवाला बाग का हत्याकांड, गोलमेज परिषद, क्रिप्स मिशन, रॉलेट एक्ट।
13. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो:-

    (अ) स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे प्राप्त करूँगा, यह कथन श्री.....का था।

    (आ) शांतिनिकेतन की स्थापना.....ने की थी।

    (इ) महात्मा गांधी के निजी सचिव श्री.....थे।

    (ई) भारत छोड़ो आंदोलन सन्.....में प्रारंभ हुआ था।

    (उ) जब देश स्वतंत्रता का उत्सव मना रहा था, तब गांधीजी .....हिंदुओं और मुसलमानों को प्रेम का संदेश देते घूम रहे थे।

अब करने की बारी

1. स्वतंत्रता संग्राम में स्वतंत्रता सेनानियों का प्रमुख राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' था। ऐसे ही उत्साह से भरे अन्य राष्ट्रीय गीतों का संकलन तैयार कर उसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रस्तुत करिए।
2. यदि आपकी कक्षा में दो बच्चों का आपस में किसी बात पर झगड़ा हो जाए तो आप उसे कैसे शांत करोगे, लिखिए।
3. आप स्वस्थ रहने के लिए क्या-कया करते हैं? अपनी जीवन चर्चा के साथ सूची बनाइए।

❑❑

संस्मरण-सुमन

माँ ने कहा था

सन् 1892 की घटना है। उस समय गांधीजी लंदन में बैरिस्टर बनने गए थे। वहाँ उनकी कोट्स नाम के एक अंग्रेज से गहरी मित्रता हो गई। दोनों मित्र सभी विषयों पर खुलकर चर्चा किया करते। एक दिन कोट्स को गांधीजी के गले में 'माला' दिखाई दी। उसने पूछा, 'मिस्टर गांधीजी, यह क्या अंधविश्वास गले में बाँधे फिरते हो।'

'मित्र यह माँ का प्रसाद है। माँ ने कहा था, तू इस माला को गले से मत उतारना। भगवान तेरी रक्षा करेगा।'

'तो क्या तुम माँ के कहने पर इतना विश्वास करते हो?'

'मैं विश्वास करूँ या न करूँ, मेरी माँ तो विश्वास करती है, मैं इसे यों ही नहीं फेंक सकता। जब यह टूट जाएगी, तब दूसरी मँगाकर पहनूँगा।'

गांधीजी की मातृ-भक्ति देखकर अंग्रेज मित्र सन्न रह गया। मन ही मन कहने लगा- तो, गांधी इसलिए माला नहीं उतारेगा कि उसे पहनने को माँ ने कहा था।

फल की भेंट

सन् 1944 में जेल से छूटने के बाद स्वास्थ्य सुधारने के लिए गांधीजी जुहू में एक मित्र के घर पर ठहरे हुए थे। दर्शनों के लिए सुबह से शाम तक जनता की भीड़ लगी रहती। पर डॉक्टरों की राय थी कि गांधीजी को बहुत लोगों से न मिलाया जाय। इसलिए श्रीमती सरोजनी नायडू ने यह कार्य अपने हाथ में ले लिया। वे गांधीजी के कमरे के दरवाजे पर बैठी रहती और उनसे किसी को मिलने नहीं देती थीं। एक दिन एक बालक सबेरे-सबेरे आ गया और दिन भर दरवाजे पर बैठा रहा और गांधीजी के दर्शन के लिए जिद करता रहा। अंत में गांधीजी ने श्रीमती नायडू से उसे भीतर आने देने के लिए कह दिया। लड़का भीतर गया, साथ में बहुत से फल लाया था। गांधीजी से उन्हें स्वीकारने का आग्रह करने लगा। लोगों ने उसे भिखारी समझा। लोगों के चेहरे का भाव समझकर उसने कहा,

चित्र 14. बापू का बच्चों पर प्रेम

महात्माजी मैं भिखारी नहीं हूँ। मैंने जब से आपके जेल से छूटने की खबर सुनी है, तब से कुली का काम करके कुछ कमाई की है। उसी कमाई से मैंने फल खरीदे हैं। गांधीजी बालक की बातों से द्रवित हो गए। बोले, 'बेटा, जाओ तुम अपनी कमाई के फल खाओ।' पर लड़के ने एक भी फल नहीं छुआ। बोला- 'महात्माजी, यदि आप खाएँगे, तो मेरा पेट भर जाएगा।' इतना कहकर वह झटपट कमरे से बाहर हो गया। उसके चेहरे पर खुशी नाच रही थी।

भाषा की गुलामी कब तक?

एक बार गांधीजी दिल्ली में भंगी कॉलोनी में ठहरे हुए थे। वाइसराय माउंटबेटन को एक महत्वपूर्ण पत्र लिख रहे थे। इतने में उनके कानों में बाहर खड़े भाई-बहिन की अंग्रेजी बातें सुनाई पड़ी। गांधीजी ने उन लोगों को अपने पास बुलाया और पूछा, 'बोलो, तुम कौन हो?'

उन्होंने कहा 'बापू हम दोनों सगे भाई-बहिन हैं।'

'तुम कहाँ के रहने वाले हो।'

'पंजाब के।'

'तुम तो पंजाबी, हिंदी, गुजराती इन सभी भाषाओं को जानते हो। फिर आपस में इनका प्रयोग क्यों नहीं करते? तुम दोनों अपनी देशी-भाषाओं की हिंसा कर रहे हो, अंग्रेजी के गुलाम बने हो। ऐसा लगता है, आज हम आजादी के लायक नहीं हुए। मैं अंग्रेजी को बुरी भाषा नहीं मानता, पर मतलब यही नहीं कि हम अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा का तिरस्कार कर दें। महात्माजी की इस फटकार से दोनों भाई-बहिन लज्जित हो गए और उनसे क्षमा माँगी।'

बच्चों के साथ बापू का तैरना

गांधीजी बच्चों से बड़ा प्रेम करते थे। उनकी जिद भी पूरी करते थे। एक बार साबरमती-आश्रम में बैठे कुछ लिख रहे थे। इतने में ही आश्रम के बच्चों की टोली उनके पास आ धमकी।

'अरे, यह वानर-सेना किस पर धावा बोलना चाहती है? गांधीजी हँसते-हँसते बोले। एक मुँहलगे बच्चे ने कहा, 'बापू'

आज हम साबरमती नदी में आपके साथ नहाएँगे और तैरेंगे भी। हम आपको लेने आए हैं।

बापू ने कहा- 'तो एक शर्त है- बोलो, पूरी करोगे।'

'क्यों नहीं? बोलिए न' बच्चे बोल उठे।

गांधीजी ने कहा- 'अच्छा यह प्रण करो कि तुम आपस में नहीं लड़ोगे-मारपीट नहीं करोगे' नहीं करेंगे। अब तो चलिए? एक साथ बच्चे चिल्ला उठे।

गांधीजी ने अपने कागज अलग रख दिए और वे बच्चों के साथ साबरमती नदी में नहाए और तैरे भी।

बच्चे और बापू खुशी-खुशी आश्रम लौट आए।

जनता के पैसे सँभालकर खर्च करो।

गोलमेज परिषद की बैठक में गांधीजी लंदन गए हुए थे। वहाँ वे वही भोजन करते थे, जो भारत में करते थे। भोजन में शहद अवश्य होता था। भोजन की व्यवस्था उनकी अंग्रेज शिष्या मीरा बेन करती थी। एक दिन वे अपने ठहरने के स्थान से शहद की शीशी लाना भूल गई। भोजन का समय हो रहा था। उन्होंने मीरा बेन को नई शीशी में से शहद डालते देख लिया। उन्होंने पूछ ही लिया, 'मीरा, अपनी पुरानी शहद की शीशी कहाँ गई? यह तो नई मालूम होती है।'

'हाँ बापू, मैं अपनी शीशी डेरे में भूल आई थी। इसलिए मैंने बाजार से नई शीशी मँगा ली,' मीरा ने सकुचाते हुए उत्तर दिया।

गांधीजी को यह अच्छा नहीं लगा। बोले, 'मीरा तुम्हें मालूम होना चाहिए कि हम जनता के पैसों पर जीते हैं। एक दिन शहद न खाने से मर थोड़े ही जाता। जनता के पैसों को सँभालकर खर्च करना चाहिए।'

फिजूलखर्ची से चिढ़

गांधीजी फिजूलखर्ची के बहुत विरूद्ध थे। वे अपने लेखों को छोटे-छोटे कागजों पर लिखते थे। कागज का कोई हिस्सा बेकार नहीं जाने देते थे, पत्र व्यवहार में लिफाफे के स्थान पर कार्ड का अधिक प्रयोग करते थे। कार्ड में थोड़े शब्द में मतलब की बात लिखने की उन्हें कला आती थी। वे जब गोलमेज परिषद में इंग्लैंड जाने लगे तो एक भक्त ने उन्हें शाल भेंट की। गांधीजी ने उसे अपने पास नहीं रखा। उन्होंने उस शाल को नीलाम कर सात हजार रुपए में बेच दी और धन हरिजन कोष में जमा कर दिया। वे कार्यकर्ताओं से कहते थे कि जहाँ पैदल जा सको, वहाँ गाड़ी का उपयोग मत करो। अफ्रीका में अपने आश्रम के लिए आवश्यक चीजें लाने के लिए कभी-कभी वे साठ-पैंसठ किलोमीटर तक पैदल चलते थे। गांधीजी चंदे में प्राप्त धन के एक-एक पैसे का हिसाब रखते थे, जैसे एक आना ट्राम पर, दो पैसे पानी आदि। वे प्रायः तीसरे दर्जे में रेल-यात्रा करते थे, क्योंकि भारत गरीब देश है। गरीब जनता तीसरे दर्जे में ही यात्रा कर सकती है। वे अपने को गरीब जनता का प्रतिनिधि मानते थे। उनकी पत्नी गहना नहीं पहनती थी, अपने लड़कों को उन्होंने खर्चीले विद्यालय में नहीं पढ़ाया और न उन्हें महँगे वस्त्र ही पहनाए। वे स्वयं खादी पहनते थे और घर के सभी आश्रित व्यक्तियों को खादी पहनाते थे। वे स्वयं अपना काम करना पसंद करते थे। वे अपने हाथ की खादी की कती धोती, जो घुटने तक रहती थी, मोटी चादर और प्रायः अपने ही हाथ की बनी चप्पल पहनते थे। अफ्रीका-जेल में उन्होंने मोची का काम भी सीख लिया था। वे कभी-कभी हँसी में कहते, 'मैं बनिया हूँ, एक-एक पैसा बचाना जानता हूँ।'

संतों की सेवा करना कठिन है

एक बार महात्माजी उड़ीसा की यात्रा के समय जगन्नाथपुरी गए। उनके साथ कस्तूरबा और महादेव देसाई

भी थे। 'बा' ने सोचा कि जगन्नाथ के दर्शन कर आना चाहिए। उन्होंने महादेव भाई से अपनी इच्छा जाहिर की। वे राजी हो गए। दोनों दर्शन करके लौटे, तो महात्माजी ने पूछा, 'कहाँ गए थे? तुम्हें नहीं पता था कि इस मंदिर में हरिजनों का प्रवेश मना है। महादेव जानता था। फिर तुम ऐसे मंदिर में क्यों गए? तुमने बड़ी गलती की।' महात्माजी इतना कहते-कहते दुखी हो गए। उनके हृदय की धड़कन इतनी अधिक बढ़ गई कि डॉक्टर को बुलाना पड़ा। गांधीजी अपने सिद्धांत के बड़े पक्के थे। हरिजनों को 'अछूत' कहना उन्हें पसंद नहीं था। जिस मंदिर में हरिजनों का प्रवेश न हो, उसमें उनकी पत्नी और सेक्रेटरी उनकी भावना को जानते हुए भी कैसे चले गए, यह बात उन्हें बहुत कष्टकार हुई। इसी से वे बैचेन हो गए थे और उनके हृदय की धड़कन बढ़ गई। महादेव भाई देसाई ने अपनी डायरी में लिखा है, 'संतो की सेवा करना और उनके साथ रहना सचमुच कठिन काम है। कब क्या हो जाए, कहा नहीं जा सकता।'

अभ्यास

प्रश्न-1 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. गांधी जी की .....भक्ति देखकर अंग्रेज सन्न रह गया।
2. लंदन में गांधी जी की अंग्रेज शिष्या .....थी।

प्रश्न-2 लघुत्तरीय प्रश्न

1. गांधीजी गले में माला क्यों पहने रहते थे?
2. बालक ने गांधीजी से फलों को स्वीकार करने का आग्रह क्यों किया?
3. गांधीजी के सामने दोनों भाई-बहिनों को लज्जित क्यों होना पड़ा?
4. गांधीजी बच्चों के साथ तैरने को किस शर्त पर तैयार हुए?
5. मीराबेन के नई शीशी में से शहद डालने पर गांधीजी ने क्या कहा?
6. किन बातों से पता लगता है कि गांधीजी फिजूलखर्ची के विरुद्ध थे?
7. कस्तूरबा और महादेव भाई देसाई पर गांधीजी किस घटना के कारण नाराज हुए?

अब करने की बारी

1. आपके शहर/गाँव या जिले में रहने वाले स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची शिक्षक एवं बड़ों की सहायता से बनाइए।
2. गाँव के बुजुर्ग व्यक्ति जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया हो अथवा जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को देखा हो, उनके अनुभव सुनकर उसे लिखिए।
3. आप अपने देश की सेवा कैसे करना चाहते हैं? सभी बच्चों से लिखाकर उसकी हस्तलिखित पुस्तिका तैयार कीजिए।

विचार-बिंदु

सत्य

गांधीजी सत्य के बड़े आग्रही थे। वे सत्य को ईश्वर मानते थे। एक बार वाइसराय लार्ड कर्जन ने कहा था कि सत्य की कल्पना भारत में यूरोप से आई है। इस पर गांधीजी बड़े क्षुब्ध हुए और उन्होंने वाइसराय को लिखा कि आपका विचार गलत है। भारत में 'सत्य' प्रतिष्ठा बहुत प्राचीन काल से चली आ रही है। 'सत्य' परमात्मा का रूप माना जाता है।

'सत्य' मेरे लिए सर्वोपरि सिद्धांत है। मैं वचन और चिंतन में सत्य की स्थापना करने का प्रयत्न करता हूँ। परम सत्य तो परमात्मा है। परमात्मा कई रूपों में संसार में प्रकट हुआ। मैं उसे देखकर आश्चर्यचकित और अवाक् हो जाता हूँ। मैं परमात्मा की 'सत्य' के रूप में पूजा करता हूँ। सत्य की खोज में अपनी प्रिय वस्तु की बलि चढ़ा सकता हूँ।

अहिंसा

अहिंसा पर गांधीजी ने बड़ा सूक्ष्म विचार किया है। वे लिखते हैं, अहिंसा की परिभाषा बड़ी कठिन है। अमुक काम हिंसा है या अहिंसा, यह सवाल कई बार उठता है। मैं समझता हूँ कि मन, वचन और शरीर से किसी को भी दुख न पहुँचाना अहिंसा है लेकिन इस पर अमल करना देहधारी के लिए असंभव है। साँस लेने में अनेक सूक्ष्म जीवों की हत्या हो जाती है। आँख की पलक उठाने-गिराने में ही पलकों पर बैठे जीव मर जाते हैं। साँप-बिच्छू को न मारें, पर उन्हें पकड़कर दूर फेंकना ही पड़ता है। इससे भी उन्हें थोड़ी बहुत पीड़ा होती ही है। मैं भी जो खाता हूँ, रहने से जो स्थान रोकता हूँ, जो कपड़े पहना हूँ, यदि उन्हें बचाऊँ, तो मुझसे जिन्हें ज्यादा जरूरत है, वे उन गरीबों के काम आ सकते हैं। मेरे स्वार्थ के कारण उन्हें वे चीज नहीं मिल पातीं, इसलिए मेरे उपयोग से गरीब पड़ोसी के प्रति थोड़ी हिंसा होती है। जो वनस्पति अपने जीने के लिए मैं खाता हूँ, उससे वनस्पति-जीवन की हिंसा होती है। बच्चों को मारने-पीटने-डाँटने में हिंसा ही तो है। क्रोध करना भी सूक्ष्म हिंसा है।

ब्रह्मचर्य

जो मन वचन और काया से इंद्रियों को अपने वश में रखता है, वही ब्रह्मचारी है। जिसके मन के विकार नष्ट नहीं हुए हैं, उसे पूरा ब्रह्मचारी नहीं कहा जा सकता। मन, वचन से भी विकारी भाव नहीं जागृत होने चाहिए। ब्रह्मचर्य की साधना करने वालों को खान-पान का संयम रखना चाहिए। उन्हें जीभ का स्वाद छोड़ना होगा और

बनावट तथा शृंगार से दूर रहना होगा। संयमी लोगों के लिए ब्रह्मचर्य आसान है।

अस्तेय (चोरी न करना)

यह पाँच बड़े व्रतों में से एक है। दूसरे की चीज उसकी इजाजत के बिना लेना चोरी है। जो चीज हमें काम के लिए मिली हो उसके सिवा दूसरे काम ले उसे में लेना या जितने समय के लिए मिली हो उससे ज्यादा समय तक उसे काम में लेना भी चोरी ही है। अपनी कम-से-कम जरूरत से ज्यादा मनुष्य जितना लेता है, वह चोरी है। अस्तेय और अपरिग्रह मन की स्थितियाँ हैं। सबके लिए इतनी बारीकी से उनका पालन करना कठिन है, पर जैसे-जैसे मनुष्य अपने शरीर की आवश्यकताएँ घटाता जाएगा, वैसे-वैसे अस्तेय और अपरिग्रह की गहराई में पहुँच जाएगा।

अपरिग्रह

जिस प्रकार चोरी करना पाप है, उसी प्रकार जरूरत चीजों का संग्रह करना भी पाप है। इसलिए हमें खाने की आवश्यक चीजें, कपड़े और टेबिल, कुर्सी, पलंग आदि सामान भी आवश्यकता से अधिक इकट्ठा करना अनुचित है। उदाहरण के लिए, यदि आपका काम किसी तरह चल जाए, तो कुर्सी रखना व्यर्थ है।

प्रार्थना

महात्माजी को प्रार्थना में अटूट विश्वास था। दक्षिण अफ्रीका में रहते समय से ही उन्होंने सार्वजनिक रूप से प्रार्थना प्रारंभ कर दी थी। प्रार्थना का मूल अर्थ माँगना है। पर गांधीजी प्रार्थना का अर्थ ईश्वरीय स्तुति, भजन कीर्तन, सत्संग, आध्यात्म और आत्म-शुद्धि मानते थे। अंग्रेजी के कवि टेनिसन ने लिखा है, प्रार्थना से वह सब कुछ संभव हो जाता है, जिसकी संसार कल्पना नहीं कर सकता। गांधीजी का भी कुछ-कुछ ऐसा विश्वास था। ईश्वर को किसी ने नहीं देखा है, उसे हमें हृदय से अनुभव करना है, साक्षात्कार करना है। इसी के लिए हमें प्रार्थना करनी चाहिए। गांधीजी सत्य और ईश्वर को मानते थे। वे सत्य का अर्थ परमात्मा निरूपित करते थे, जो जगत में प्रारंभ से ही था, अभी है और भविष्य में भी रहेगा। आराधना ही प्रार्थना है, प्रार्थना में सत्य से एकाकार होने की इच्छा रखनी चाहिए। जिस प्रकार विषयी अपने विषयों में एकरस होने के व्याकुल हो जाता है, उसी प्रकार हमें भी उस परम सत्य में एकरस होने से लिए व्याकुल हो जाना चाहिए। प्रार्थना में व्याकुलता आनी चाहिए।

स्वास्थ्य

महात्माजी ने आजीवन स्वास्थ्य की चिंता की और उसके लिए तरह-तरह के उपायों का अवलंबन किया। वे औषधियों के घोर विरोधी थे। उन्होंने कूने की जल-चिकित्सा, जुष्ट की 'प्रकृति की ओर लौटो' और साल्ट की 'शाकाहार' आदि पुस्तकें पढ़कर उसमें बतलाए हुए नियमों को पालने का प्रयत्न किया। अफ्रीका में रहते हुए भी वे अपने 'पत्र' में आरोग्य पर लेख लिखा करते थे। वहीं उन्होंने स्वास्थ्य की एक कुंजी नामक एक

पुस्तक लिखी। उसमें उन्होंने अपने पूर्व अनुभवों को सम्मिलित किया है। उन्होंने भोजन के संबंध में कई प्रयोग किए। दूध बहुत दिनों तक नहीं ग्रहण किया, पर अधिक अस्वस्थ्य होने पर बकरी का दूध लेने लगे थे। सेवा ग्राम में एक बार ऐसे सज्जन आए जो बिना अग्नि स्पर्श का अन्नाहार करते हैं। गांधीजी ने भी उनका अनुसरण किया और कुछ दिन तक अंकुरित कच्चे अन्न पर ही रहे पर उससे उन्हें पेचिश की शिकायत होने लगी। एक बार नीम की बहुत-सी पत्तियों के खाने से चक्कर आने लगे थे। अनुभवों के बाद अंत में वे घर की चक्की में पिसे चोकर-सहित आटे की डबल रोटी के कुछ टुकड़े, खजूर, अंगूर, शहद, मौसम्बी, नींबू आदि मौसमी फल, मेवे तथा बकरी के दूध पर रहने लगे थे। सर्वसाधारण के लिए वे हरी सब्जी, दाल, हाथ के कुटे चावल, चोकर-सहित गेहूँ की रोटी, थोड़ा दूध और घी का प्रयोग उचित मानते थे।

वे तारों-भरी रात में खुली छत या आँगन में सोना पसंद करते थे। सर्दी से बचने के लिए आवश्यक कपड़े ओढ़ लेते थे। आकाश के नीचे सोने से सचमुच स्वास्थ्य चमकने लगता है। ऐसा प्रतीत होता है, मानो आकाश से चन्द्र और तारों की किरणों से अमृत झरता हो। गांधीजी आश्रमवासियों को पानी उबालकर पीने की सलाह देते थे। प्रातः खुली हवा में घूमना स्वास्थ्यवर्धक मानते थे। अफ्रीका में वे कभी-कभी एक दिन में साठ-पैसठ किलोमीटर पैदल चलते थे। वे कहीं भी रहते, पैदल चलना नहीं भूलते। लंदन में जब वे गोलमेज परिषद में भाग लेने गए, तो ठिठुरने वाली सर्दी में भी प्रातः लंबे डग भरते हुए टहलने जाते थे। नींद तो उनके वश में थी। वे रात चाहे जितनी देर तक जागें, प्रातः चार बजे से पूर्व उठ जाते थे, और हाथ-मुँह धोकर प्रार्थना करते थे। दिन को भी इच्छा से बीच-बीच में झपकी ले लेते थे। वे जल, आकाश, वायु, तेज और पृथ्वी के उपयोग को प्राकृतिक चिकित्सा के अंतर्गत मानते थे। जल का उपयोग टब-स्नान करने में, वायु का प्रातः भ्रमण करने में, पृथ्वी की स्वच्छ मिट्टी की पट्टी शरीर के बीमार अंग पर रखने में, तेज को सेंकने में आकाश का उपयोग, सूर्य की किरणों से स्नान करने और रात को उसके नीचे सोने से हो जाता है। परंतु इन सबके अतिरिक्त, 'राम-नाम' को वे सब रोगों पर रामबाण औषधि मानते थे। रामबाण तभी प्रभावित होता है, जब हृदय से लिया जाए।

समाजवाद

समाजवाद बड़ा सुंदर शब्द है। उसमें राजा और किसानों, गरीब और धनवान, मालिक और मजदूर सभी समान स्थिति में आ जाते हैं, न कोई बड़ा रहता है, न कोई छोटा। दर्शन की भाषा कहें, तो समाज में 'द्वैत' रहता ही नहीं, अद्वैत ही रहता है परंतु जब हम संसार की ओर आँख उठाकर देखते हैं तो कहीं अद्वैत नहीं दिखाई देता, द्वैत ही दिखाई देता है। 'यह ऊँचा है, यह नीचा है, यह हिंदू है, यह मुस्लिम है, यह सिख है, यह ईसाई है- यही सुनाई पड़ता है। इनमें भी उपभेद हैं।' गांधीजी विभिन्नता में एकता के दर्शन करने में सच्चा समाजवाद पाते थे। इस आदर्श तक पहुँचने के लिए भाषणों से काम नहीं चलेगा, हमें अपने जीवन के क्रम को बदलना होगा। समाजवाद एक व्यक्ति के आदर्श जीवन ग्रहण करने से प्रारंभ हो सकता है। लोग धीरे-धीरे जब उसका अनुसरण करने लगेंगे, तो

संपूर्ण समाज में समानता स्थापित हो जाएगी। समाजवाद स्फटिक के समान शुभ और पवित्र है। उस तक पहुँचने के लिए पवित्र साधन अपनाने होंगे। गलत साधन का परिणाम भी गलत होगा। महात्माजी समाजवादी ईश्वर में आस्था को भी आवश्यक मानते थे। परमात्मा सबसे बड़ी शक्ति है। उसमें विश्वास मानने से अवश्य बल बढ़ता है। उन्होंने अपने विषय में लिखा है कि मैं तो जब भारत में लोग समाजवाद का नाम भी नहीं जानते थे, तब से समाजवादी हूँ। समाजवाद मेरे स्वभाव में रहा है। मैंने उसे किताबों में नहीं सीखा। अहिंसा के सिद्धांत में विश्वास करने के रूप में एकता की भावना मुझमें पैदा हो गई थी। अहिंसावादी समाज में अन्याय देख ही नहीं सकता।

भाषा और लिपि

महात्माजी ने अंग्रेजी को दैनिक व्यवहार की भाषा नहीं माना। वे देश में प्रांतों के परस्पर संपर्क के लिए कई राष्ट्रभाषा की आवश्यकता अनुभव करते थे। इसलिए उन्होंने सारे देश में भ्रमण कर यह निर्णय लिया कि हिंदी, जिसे उन्होंने बाद में हिन्दुस्तानी कहा, राष्ट्रभाषा होने योग्य है।

उन्होंने भाषा के नीचे लिखे हुए लक्षण बताए हैं-

1. वह प्रयोग करने वालों के लिए सरल होनी चाहिए।
2. उसके द्वारा भारत का आपसी धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवहार हो सके।
3. भारत वर्ष के बहुत से लोग उसे बोलते हों। हिंदी भाषा में यह सब लक्षण मिलते हैं। यह समस्त लक्षण धारण करने में हिंदी से होड़ करने वाली दूसरी कोई भाषा नहीं है।

महात्मा गांधी का प्रिय भजन

वैष्णव जन तो तेणे कहिए, जे पीड़ पराई जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे तोए, मन अभिमान न आणे रे।
सकल लोक मा सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे।
वाच काछ निश्चल राखे, धन-धन जननी तेनी रे।
समदृष्टी ने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे।
मोह माया व्यापे नहीं जेने, दृढ़ वैराग्य जेता मनमाँ रे।
राम नाम शुँताली लागी, सकल तीरथ लेना तनमाँ रे।
बणलोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे।
भणे नरसैंयों तेनुँ दरसन करताँ, कुल एकोतेर तार्या रे।

– नरसी मेहता

अभ्यास

प्रश्न-1 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. महात्मा जी को प्रार्थना में अटूट .....था।
2. अस्तेय का अर्थ .....है।
3. गांधी जी सत्य को .....मानते थे।

प्रश्न-2 लघुत्तरीय प्रश्न-

1. सत्य के जन्म को लेकर गांधीजी लार्ड कर्जन के विचारों से क्यों असहमत थे?
2. अहिंसा से गांधीजी का क्या आशय था?
3. गांधीजी के अनुसार ब्रह्मचारी कौन कहलाता है?
4. गांधीजी प्रार्थना करना आवश्यक क्यों मानते हैं?
5. गांधीजी का समाजवाद से क्या तात्पर्य था?
6. हिंदी की किन विशेषताओं के कारण गांधी उसे राष्ट्रभाषा होने योग्य मानते थे?

अब करने की बारी

1. मातृभाषा प्रेम पर विभिन्न कवियों/लेखकों/विद्वानों द्वारा कही गई बातों का संकलन तैयार कीजिए।
2. आप विचार करिए कि क्या-क्या वस्तुएँ यदि आपके पास नहीं होती तब भी आपकी दैनिक चर्चा में कोई अंतर नहीं आता, ऐसी वस्तुओं की सूची तैयार कीजिए।
3. विद्यालय में आप जो प्रार्थना प्रतिदिन करते हैं उसके अतिरिक्त अन्य प्रार्थनाओं का संकलन तैयार कीजिए।
4. विभिन्न स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के चित्रों को संकलित कर एक एलबम तैयार कीजिए।

❑❑

समग्र स्वच्छता अभियान संदेश

1. खाना खाने के पहले हाथ धोयें।

2. शौच के बाद साबुन से हाथों को अवश्य धोयें।

3. शौच के लिए शौचालय में ही जायें।

4. घड़े में से पानी डंडी वाले लोटे से ही निकालें, पानी में उंगलियाँ नहीं डुबाना चाहिये।